ओ३म्
आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 06 जनवरी 2019 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 06 जनवरी 2019 से 12 जनवरी 2019

पौष शु. – 01 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 61, अंक 01, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्यसमाज लोहगढ़ में 'वैदिक यज्ञ' का आयोजन

महर्षि दयानन्द द्वारा दिए गए मूलमंत्र 'वेदों की ओर चलो' को साकार करते हुए बी. बी. के. डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर द्वारा प्राचीनतम ऐतिहासिक आर्यसमाज लोहगढ़ में स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस को समर्पित विशेष 'वैदिक यज्ञ' का आयोजन किया गया। जिसमें श्री सुदर्शन कपूर अध्यक्ष, स्थानीय प्रबन्धकर्त्री समिति द्वारा मुख्य यजमान प्रो. (डॉ) हरमहेन्द्र सिंह बेदी (चान्सलर, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला) मुख्य वक्ता तथा श्री जे.पी. शूर (प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब व निदेशक पब्लिक स्कूल, डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली) ने पावन यज्ञ में भाग लिया।

कॉलेज प्राचार्या, डॉ. पुष्पिंदर वालिया ने अतिथियों का स्वागत पर्यावरण–संरक्षण के प्रतीक पौधे देकर किया। उन्होंने कहा कि "आर्य समाज' कोई धर्म, जाति या सम्प्रदाय नहीं अपितु एक जज्बा और आदर्श है। यह एक ऐसी विचारधारा हैं जो निरन्तर समाज का कल्याण करती आ रही है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा हंसराज एवं आदरणीय आनंद स्वामी जी के आशीर्वाद एवं आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी (पद्मश्री) के योग्य मार्गदर्शन में समस्त आर्यसमाज एवं डी.ए.वी. संस्थाएँ शिक्षा के माध्यम से समाज और युवा पीढ़ी में आदर्श भारतीय संस्कृति का पोषण कर रहें हैं।

मुख्य वक्ता डॉ. हरमेन्द्र सिंह बेदी ने अपने वक्तव्य में छात्राओं को आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द, महात्मा हंसराज तथा स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन परिचय से परिचित कराया।

श्री जे.पी. शूर ने प्राचार्या (डॉ.) पुष्पिंदर वालिया को यज्ञ के सफल आयोजन पर बधाई दी। उन्होंने कहा 'हमारी वैदिक संस्कृति की अमूल्य धरोहर में तार्किकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण लाकर महर्षि ने भारतीय समाज का पुनर्जागरण किया।

डॉ. वालिया द्वारा श्री सुदर्शन कपूर, श्री जे. पी. शूर तथा आर्य समाज के सदस्यों को सम्मानित कर स्मृति चिह्न भेंट किये गए।

डी.ए.वी. धर्मशाला में मनाया गया स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

बी. डी. डी.ए.वी. धर्मशाला में आर्य युवा समाज के सदस्यों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्य एस.एच. खान ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी जी ने अपनी पुत्री का विवाह जात–पात तोड़कर किया। कन्याओं की शिक्षा के लिए पाठशाला खोली, दलितों के लिए काम किया, शास्त्रार्थ किए तथा शुद्धि आन्दोलन चलाया। वैदिक शिक्षा के प्रचार के लिए

उन्होंने गुरुकुल काँगडी की स्थापना की महात्मा गाँधी जी उन्हें अपना बड़ा भाई मानते थे। सत्याग्रह आदोलन में जब महात्मा गाँधी को नजरबन्द किया गया तो स्वामी जी ने आदोलन को अपने हाथों में ले लिया। स्वामी जी ने आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए अनेक कार्य किए। उनका समस्त जीवन, धर्म, राष्ट्र, राष्ट्रभाषा और जनता की सेवा में अर्पित करके यह दिव्य ज्योति परम ज्योति में समा गई। शांति पाठ और प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

डी.ए.वी. एच.सी.एल. विद्यालय में आयोजित हुआ भाषा संगम कार्यक्रम

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्देशानुसार डी.ए.वी. एच.सी एल. विद्यालय मलांजखंड में भाषा संगम कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया।

"एक भारत श्रेष्ठ भारत" की संकल्पना को साकार करते हुए स्कूली छात्रों को देश के अलग–अलग प्रदेशों में बोली जाने वाली 22 विभिन्न भाषाओं को सीखने का अवसर मिला। भाषा संगम के तहत एक नई भाषा से सम्बंधित बोलचाल के शब्द और संवाद से जुडी पाँच पंक्तियाँ बताई गयी। विद्यालय में भाषा से सम्बंधित

विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गयी जिसमे सभी शिक्षक और विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्राचार्य श्री राजेंद्र प्रसाद मिश्रा ने छात्रों को अन्य भारतीय भाषाएँ सीखने के लिए प्रेरित किया। भाषायी सहिष्णुता और राष्ट्रीय एकता एव अखंडता को अक्षुण्णता बनाये रखने के लिए यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 06 जनवरी 2019 से 12 जनवरी 2019

हे सोम! हृदय–कलश में प्रवेश करो

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पवस्य सोम देववीतये वृषा, इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमाविश।
पुरा नो बाधाद् दुरिताति पारय, क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते।।

ऋग् ९.७०.९

ऋषिः **रेणुः वैश्वामित्रः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **जगती**।

● **(सोम)** हे सोम परमात्मन्! **(तू)**, **(वृषा)** वर्षक **(होता हुआ)**, **(देववीतये)** दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए, **(पवस्य)** प्रवाहित हो, **(इन्द्रस्य)** आत्मा के, **(हार्दि)** हृदय–रूप, **(सोमधानं)** सोम–कलश में, **(आविश)** प्रविष्ट हो।, **(बाधात्)** बाधे जाने से, **(पुरा)** पहले, **(नः)** हमें, **(दुरिता अति)** पापचरणों से लंघाकर, **(पारय)** पार करदे। **(क्षेत्रवित्)** मार्ग का ज्ञाता, **(विपृच्छते)** विशेषरूप से पूछनेवाले के लिए, **(दिशः)** दिशाओं को, **(आह हि)** बताता ही है।

● हे रसागर सोम परमात्मन्! तुम 'वृषा' हो, रस की वर्षा करनेवाले हो। तुम दिव्य गुणों के रस के साथ मेरे अन्दर प्रवाहित होवो। तुम आत्मा के हृदय–रूप सोम–कलश में आकर प्रविष्ट होवो। मेरा आत्मा न जाने कब से सोम–पान के लिए उत्कंठित हो रहा है, उस प्यासे की तृषा को दूर करो। तुम कामवर्षी हो, मेरी कामना को पूर्ण करो। तुम आनन्दवर्षी हो, मुझपर आनन्द की वर्षा करो।

कभी–कभी मेरा आत्मा 'दुरितों' से घिर जाता है। पाप–भावनाएँ उसे आगे बढ़ने से रोकती हैं। पाप–कर्म उसे निगलने के लिए तैयार रहते हैं। आसपास का पापमय वातावरण उसे पाप–मार्ग पर चलने के लिए प्रलोभित करता है। ऐसे समय में हे मेरे सोम प्रभु! क्या तुम खड़े देखते ही रहोगे? क्या तुम मुझे 'दुरितों' से ग्रसा जाने दोगे? क्या तुम मुझे पाप–ताप के प्रहारों से छलनी हो जाने दोगे? क्या तुम मुझे दुराचार–रूप शत्रुओं से आक्रान्त हो जाने दोगे? नहीं, तुम मेरे उद्धारक होकर आओ। इससे पहले कि 'दुरित' मेरे आत्मा पर प्रभुत्व पायें, उसे पतनोन्मुख करें, तुम त्वरित गति से मेरे पास आ जाओ और मुझे उन दुरितों से लंघाकर पार कर दो। संसार का यह नियम है कि जो 'क्षेत्रवित्' है, मार्ग का ज्ञाता है, वह पूछनेवाले को दिशा बताता ही है। तुमसे बढ़कर 'क्षेत्रवित्' बढ़कर मार्गज्ञ अन्य कौन है! अतः हे मेरे सोम प्रभु! मैं तो तुम्हीं से दिशा पूछता हूँ। मैं दिग्भ्रान्त हो रहा हूँ, तुम कुतुबनुमा यन्त्र की सुई बनकर मुझे दिशा दर्शाओ। यदि तुमसे दिशा–ज्ञान न मिला, तो मेरा जीवन–पोत भव–सागर में डूबकर नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगा। हे प्रभु! मुझ भूले को सही राह दिखाओ, मुझ भटके को गन्तव्य लक्ष्य पर पहुँचाओ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

भगवान शंकर और दयानन्द

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में स्वामी जी ने बताया जिस परमात्मा ने सारे संसार को रचा है वह तुम्हारे अन्दर, तुमसे पृथक् होकर बैठा है, अज्ञान के कोहरे ने उसे छुपा रखा है, अविद्या ने तुम्हारी बुद्धि को मलिन कर दिया है, उसे तुम देख नहीं पाते, केवल तर्क के जाल में फँसे रहते हो। तुम केवल प्राणों का पोषण करते हो, केवल बातें बनाते हो, इसीलिए तुम उसे देख नहीं पाते।

जो लोग प्राणों की ही पालना करते रहते हैं, वेद उन्हें असुतृप कहता है, उनकी निन्दा करता है। यह शरीर तो भगवान् का मन्दिर है। जो लोग इसे जीवित रखने के लिए खाते हैं, वेद उन्हें असुतृप नहीं कहता।

ईश्वर स्वयं कभी उत्पन्न नहीं होता, कभी मरता नहीं। जैसे घड़े के नष्ट हो जाने पर घड़े के अन्दर का आकाश नष्ट नहीं होता, इसी प्रकार शरीर के नष्ट होने से शरीर में रहनेवाले आत्मा का नाश नहीं होता। प्रकट न होनेवाला परमात्मा जब प्रकट होनेवाली प्रकृति में प्रेरणा करता है, तब प्रकृति न रहकर विकृति बन जाती है।

अब आगे ...

जो भाई समझते हैं कि जगद्गुरु शङ्कराचार्य आत्मा के अतिरिक्त और किसी भी अस्तित्व को नहीं मानते थे, उन्हें इस श्लोक को ध्यान से पढ़ना चाहिए। आत्मा के अतिरिक्त एक प्रकृति भी है, जो आत्मा की शक्ति से विकृति बनती है, ऐसा जगद्गुरु शंकाराचार्य घोषणापूर्वक कहते हैं। ब्रह्म और विकृति को एक–दूसरे से पृथक करने के पश्चात् वे जीवात्मा को भी ब्रह्म से अलग करते हैं। कहते हैं; जीवात्मा हृदय के अन्दर रहता है, 'मैं हूँ' ऐसा अनुभव होता है, जागते समय, स्वप्न देखते समय और गाढ़ निद्रा की दशा में सदा एक–सा रहता है। तब इसका अर्थ क्या हुआ? यह कि जगद्गुरु शंकराचार्य ब्रह्म, जीव और प्रकृति तीनों को मानते हैं। यदि तीनों को मानें तो यह कहना कि एक ब्रह्म ही है उसके अतिरिक्त दूसरा कुछ नहीं, सत्य कैसे हुआ?

परन्तु शंकराचार्य का उद्देश्य था उस फैली हुई नास्तिकता को समाप्त करना। उन्होंने सोचा, यदि मैं तीन कहूँगा तो लोग चक्कर में पड़ जायेगे। इसलिए आगे बढ़कर उन्होंने प्रकृति या माया की एक और परिभाषा की। कहा कि माया ईश्वर की शक्ति है, जब सृष्टि न हो तब प्रकट नहीं होती। सृष्टि के आरम्भ में प्रकट होती है। परन्तु प्रकट हो या न हो, वह सदा रहती है, उसी को अविद्या कहते हैं, उसी में सत्, रजस् और तमस् तीन गुण हैं, उसी से सारा जगत् उत्पन्न होता है।

और भी आगे चलकर उन्होंने ब्रह्म को तीन भागों में विभक्त कर दिया। पहला भाग वह, जो ब्रह्म है, जो माया के बिना है, माया से परे, प्रकृति के ऊपर, उसको वे शुद्ध ब्रह्म कहते हैं। दूसरा भाग वह ब्रह्म है जो अहंकार में लिपटा पड़ा है 'मैं हूँ' ऐसा सोचता है। उसको वे अन्तःकरण विशिष्ट ब्रह्म अर्थात् जीव कहते हैं। तीसरा भाग वह ब्रह्म है जिसका वर्णन नहीं हो सकता। जिससे यह सारा जगत् बना है, उसको उन्होंने माया कहा। अब आप सोचकर देखिए कि जगद्गुरु शंकराचार्य का शुद्ध ब्रह्म ही महर्षि दयानन्द का परमात्मा है। जगद्गुरु शंकाराचार्य का जीव अथवा अन्तःकरण ही महर्षि का आत्मा है और जगद्गुरु की माया ही महर्षि की प्रकृति है। जगद्गुरु शंकराचार्य वास्तव में इन्हीं तीनों वस्तुओं को मानते हैं, जिन्हें महर्षि दयानन्द भी मानते हैं। वेद भी इन तीनों को अनादि मानता है। कहने को शंकर और दयानन्द में अन्तर है अवश्य, परन्तु गहराई में जाकर क्रियात्मक रूप से देखिये तो ज्ञात होगा कि दोनों में कोई अन्तर नहीं, दोनों एक ही बात कहते हैं।

परन्तु मैं तो जगद्गुरु शंकाराचार्य की बात कह रहा था, जिस प्रकार से उन्होंने माया की परिभाषा की, उस पर विचार किजिये। वे कहते हैं कि माया ब्रह्म की शक्ति है। यह भी कहते हैं कि माया जड़ है और यह भी कि माया में दुःख है। तब प्रश्न उत्पन्न होता है कि ब्रह्म यदि चेतन है तो उसकी शक्ति जड़ कैसे हो गई? ब्रह्म यदि आनन्द से परिपूर्ण है तो उसी का एक भाग दुःख में क्यों डूब गया? वे जगद्गुरु उत्तर देते हैं कि अज्ञान से ऐसा हुआ। परन्तु इसका अर्थ तो यह हुआ कि माया की शक्ति ब्रह्म से बड़ी है, वह चेतन ब्रह्म को जड़ बना देती है, आनन्द से भरपूर ब्रह्म को दुःख के सागर में ध्वस्त कर देती है। ऐसा मामने से तो यही कहना पड़ेगा कि ब्रह्म की नहीं माया की पूजा होनी चाहिए; जो बड़ा है उसको प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

आजकल हमने यही बात समझ रखी

शेष पृष्ठ 03 पर ☞

गतांक से आगे

पण्डित श्रीगंगाप्रसाद उपाध्याय

(व्यक्तित्व और कृतित्व)

● स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

आयु, स्वास्थ्य और अन्तिम घड़ियाँ

उपाध्यायजी का जन्म 6 सितम्बर 1881 को हुआ, 1887 में पट्टी–पुजाई हुई, मौलवी से फारसी पढ़ना आरम्भ हुआ, पिताजी से उर्दू पढ़ी, दस वर्ष की आयु में पितृ–हीन हो गये। 1892 में एटा के तहसीली स्कूल में भरती हुए, 14 वर्ष की आयु में मिडिल की परीक्षा पास की। अलीगढ़ के हाईस्कूल से 1901 में फारसी लेकर इंट्रेन्स की परीक्षा पास की। परिवार में सभी गुरुजन हुक्का पीते थे, बूढ़ी औरतें भी पीती थी। ये भी पीने लगे। यही समय था, जब इन्होंने स्वामी दयानन्द का नाम सुना और आर्यसमाज का। धीरे–धीरे सभी साथियों ने भी हुक्के तोड़ दिये, स्कूल में हवन हुआ और यज्ञोपवीत। वैदिक आश्रम अलीगढ़ में रहने लगे। इस आश्रम ने इनके जीवन के भविष्य का निर्माण किया। इसी बीच परिवार के लोगों ने विवाह पक्का कर दिया, और विवाह सम्पन्न भी हो गया। गरीबी के दिन थे। गौना हो गया। पत्नी का नाम कलावती था, जो कलादेवीजी के नाम से उपाध्यायजी की सहधर्मिणी विख्यात हुईं। पत्नी का भी यज्ञोपवीत कराया जो उस समय के लिए बड़ी नई बात थी। उपाध्यायजी को इंट्रेन्स पास करते ही नौकरी मिल गयी– सरकारी हाईस्कूल अलीगढ़ में अध्यापिकी (1901)। फिर इलाहाबाद से टीचर्स ट्रेनिंग की परीक्षा पास की और उसके बाद ही बिजनौर के सरकारी हाईस्कूल में अध्यापिकी मिली। 1905 में बिजनौर में इसके बड़े पुत्र सत्यप्रकाश का जन्म हुआ और 1907 में द्वितीय पुत्र विश्वप्रकाश का। 1908 में उपाध्यायजी का बिजनौर से बाराबंकी के लिए ट्रान्सफर हुआ। बिजनौर में ही 1905 में उपाध्यायजी ने इण्टर पास किया और 1908 में संस्कृत लेकर बी.ए. पास किया। बाराबंकी आने पर 1912 में इन्होंने अंग्रेजी में एम.ए. पास किया। सभी परीक्षायें अध्यापक की हैसियत से दी थीं– किसी कॉलेज या यूनिवर्सिटी में पढ़ने का सुयोग नहीं मिला। सितम्बर 1917 में उपाध्यायजी प्रतापगढ़ (अवध) के स्कूल में बदलकर आ गए और यहीं से उन्होंने सरकारी नौकरी से त्याग पत्र दे दिया। 1918 में ये डी.ए.वी. हाईस्कूल इलाहाबाद के प्रधानाध्यापक हो गए। 21 जुलाई 1939 तक इस पर रहे, फिर त्याग पत्र देकर आर्यसमाज का काम करने लगे। इस समय 58 वर्ष की आयु थी। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की ओर से श्री उपाध्यायजी को 25 दिसम्बर, 1959 को एक अभिनन्दन ग्रन्थ मथुरा नगरी के विशाल दयानन्द दीक्षा शताब्दी समारोह में भेंट किया गया, और राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसादजी के कर कमलों से यह उपक्रम सम्पन्न हुआ। स्मरण रहना चाहिए कि 1859 में महर्षि दयानन्द गुरु विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त करने के लिए मथुरा आये थे।

उपाध्यायजी की मृत्यु 29 अगस्त 1968 को 87 वर्ष की अवस्था में हुई, अर्थात् रिटायर होने के 29 वर्ष बाद अभिनन्दन समारोह के 9 वर्ष बाद। उपाध्यायजी का स्वास्थ्य बहुत अच्छा तो न था, पर ईश्वर ने उन्हें लम्बी आयु दी थी। उनकी पत्नी भी 78 वर्ष की आयु में 1967 के दिसम्बर में दिवंगत हुईं। उपाध्यायजी बाराबंकी में न्यूमोनिया से पीड़ित हुए, उसका प्रभाव उनके फेफड़े पर जीवन भर रहा। बाराबंकी में उनकी पुत्री सुदक्षिणा का जन्म हुआ। बाद की 6 सन्तानें शैशवकाल में ही मृत्यु का ग्रास बनी। अन्तिम दो सन्तानें, श्री प्रकाश और रविप्रकाश प्रयाग आने पर पैदा हुईं। उनकी इन पाँच जीवित सन्तानों में से चार अभी जीवित हैं– सत्यप्रकाश, विश्वप्रकाश, श्रीप्रकाश और रविप्रकाश। सुदक्षिणा और उसके पति प्रेमबहादुर की वर्ष 1980 ई. में मृत्यु हो गयी। (यह लेख 1981 में लिखा गया था, अब उपाध्याय जी की कोई सन्तान जीविन नहीं है– ज्वलन्त शास्त्री)।

उपाध्यायजी को जीवन में दो बड़े ऑपरेशन कराने पड़े, एक तो फाइलेरिया का 1935 में दिल्ली में और दूसरा प्रोस्टेट का प्रयाग में। आँखों में आखीर तक मोतियाबिन्द रहा, जिसका ऑपरेशन सफल भी नहीं रहा– जब ऑपरेशन हुआ तो उस आँख में ज्योति समाप्त हो चुकी थी। वृद्धावस्था में कमजोर तो हो ही गए थे। होली के दिन छत पर फिसलकर गिरे तो कूल्हे की हड्डी टूट गयी। इस कारण जीवन का अन्तिम वर्ष बड़े कष्ट का बीता। धीरे–धीरे हृदय कमजोर पड़ता जा रहा था। कई दिन खाना बन्द रहा, खाने की रुचि रह ही न गई। अपने लखपतराय लेन, इलाहाबाद के मकान में प्रातः काल 29 अगस्त, 1968 को उनका प्राणान्त हुआ। मस्तिष्क अन्तिम घड़ी तक स्वस्थ था। आवाज धीमी पड़ गयी थी, पूरे होश–हवाश में उनके श्वास निकल गए। विश्वप्रकाश और उनकी पत्नी श्रीमती मन्दालसाजी ने बड़ी निष्ठा, स्नेह और तपस्या से उपाध्यायजी की अन्तिम घड़ियों में सेवा की। रेडियो ने 29 अगस्त के दिन देशभर में घोषित कर दिया कि उपाध्यायजी अब दिवंगत हो गए। उसी दिन उनका भव्य अन्त्येष्टि संस्कार हुआ।

उपाध्यायजी का साहित्य ही उनका सर्वश्रेष्ठ स्मारक है। उपाध्यायजी की प्रतिभा के लेखक और उनकी गरिमा के विचारक युगों में ही मानव समाज को प्राप्त होते हैं।

प्रस्तुति डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री
अमेठी उ.प्र.

☞ पृष्ठ 02 का शेष

भगवान शंकर और दयानन्द

है कि माया की पूजा को ही धर्म बना रखा है। पचवर्षीय योजनाएँ बनती हैं, बाँध बनते हैं, पुल बाँधते हैं, सड़कें, यन्त्रगृह सब माया की पूजा के लिए। विश्वास कर लिया हमने कि माया ही सबसे बड़ी है, उससे बड़ा और कुछ नहीं।

एक व्यक्ति का विवाह हो गया। वह अपने घर में रहने लगा। घर में कुछ छोटे–छोटे सफेद चूहे थे। एक दिन एक मोटा चूहा एक छोटे चूहे को खा गया। उस व्यक्ति ने समझा यह मोटा चूहा ही शक्तिशाली है, इसकी पूजा करनी चाहिए। वह उसे खिलाने–पिलाने लगा। परन्तु एक दिन उसने देखा कि एक बिल्ली आ गई। चूहा उसको देखते ही बिल में जा घुसा। वह बिल्ली की पूजा करने लगा। एक दिन बिल्ली एक कुत्ते को देखकर भाग गई। उसने समझा कुत्ता ही बड़ा है, कुत्ते की पूजा करने लगा। परन्तु एक दिन घर में आया तो देखा कि कुत्ता आगे–आगे भागा जाता है, उसकी पत्नी हाथ में झाड़ू लिये पीछे भाग रही है। उसने समझा मेरी पत्नी बड़ी है, उसकी पूजा करने लगा। परन्तु यह तो पूजा करने की विधि नहीं। पूजा करनी है तो उसकी करो जो सबसे बड़ा है। पहले उसे जानो, फिर उसका पल्ला पकड़ लो। मैं पंचवर्षीय योजनाओं, पुलों और यन्त्रगृहों का विरोध नहीं करता, केवल यह कहता हूँ कि इनकी पूजा को धर्म न बना लो। इनकी पूजा करने से सच्ची शान्ति नहीं मिलेगी, सच्चा सुख नहीं मिलेगा। यह सब तो माया है, जड़। इसकी अपनी कोई शक्ति नहीं। जगद्गुरु शंकराचार्य ने उसे ईश्वर की शक्ति कहकर और फिर उसे जड़ और दुःखवाली कहकर स्वयं अपनी ही समझ से अन्याय किया है।

वास्तविकता यह है कि ब्रह्म अलग है, प्रकृति अथवा माया अलग और जीवात्मा दोनों से भिन्न।

'मैं ब्रह्म हूँ' ऐसा कहने का अधिकार केवल उसको मिलता है जिसने चार प्रकार के साधनों से अपने–आपको बड़ा बना लिया है। ब्रह्म का अर्थ ही बड़ा है। परन्तु ब्रह्म यदि बड़ा है तो स्पष्ट है कोई उससे छोटा भी होना चाहिए। किसी व्यक्ति का एक ही बेटा हो तो उसे कोई बड़ा नहीं कहता। यह बेटा बड़ा बनेगा उस समय, जब उसका कोई छोटा भाई उत्पन्न हो जाये। तब एक छोटा होगा, दूसरा बड़ा। ब्रह्म का अर्थ ही यह है कि उससे छोटा भी कोई है, और वह छोटा है आत्मा या जीव। यदि आत्मा न हो तो ब्रह्म को ब्रह्म कहना ही अशुद्ध हो जायेगा। जो लोग कहते हैं कि यह सब ब्रह्म है, उनसे पूछो कि यदि यह सब ब्रह्म है, तो फिर छोटा कौन है? किसी की अपेक्षा से तुम उसको ब्रह्म कहते हो। यदि इस बात का उत्तर नहीं दे सकते तो फिर वेद की बात मानो। देखो! सदा से तीन वस्तुएँ वर्तमान हैं, एक प्रकृति जो जड़ है, दूसरा आत्मा जो छोटा है, तीसरा परमात्मा जो सबसे बड़ा है, इसलिए ब्रह्म है।

कुछ और लोग माया के सम्बन्ध में एक और बात कहते हैं। मकड़ी का उदाहरण देकर बताते हैं कि जिस प्रकार मकड़ी चेतन होते हुए भी अपने शरीर से जाला निकालकर अपने चहुँ ओर इस जड़ जाले को तान लेती है, इसी प्रकार चेतन ब्रह्म भी जड़ शक्ति को उत्पन्न करके उसे सब ओर फैला देता है। वितण्डावाद के लिए यह बात अच्छी प्रतीत होती है, परन्तु तर्कवादी यह नहीं सोचते कि मकड़ी का एक शरीर है, एक जड़ शरीर, उससे यह जाला निकालती है। जाला भी जड़ है। परन्तु ईश्वर का तो कोई शरीर नहीं, उसके अन्दर कुछ भी जड़ नहीं, फिर यह जड़ माया उसके भीतर से उत्पन्न कैसे होगी? वास्तविकता यह है कि प्रकृति कभी उत्पन्न हुई नहीं, सदा से जड़ है, सदा से भिन्न।

उपनिषदों का उदाहरण देकर एक और बात भी इस सम्बन्ध में कही जाती है। उपनिषद् में एक स्थान पर आया है कि 'वहाँ पहुँच–कर' वह एक ही देखता है, दूसरा कोई नहीं होता। इसे वेदान्ती भाइयों ने यह समझा कि ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ है नहीं, परन्तु उन्होंने यह नहीं विचारा कि इस 'वहाँ पहुँचकर' का क्या अर्थ है। 'वहाँ पहुँचकर' का अर्थ है चार प्रकार के साधनों को अपनाने और उनपर आचरण करने के पश्चात् समाधि की दशा में पहुँचना। समाधि की अवस्था में मन नहीं रहता, चित्त नहीं रहता, अहंकार नहीं रहता, कुछ भी नहीं रहता। इधर एक छोटी ज्योति, सम्मुख एक विशाल ज्योति, और कुछ भी शेष नहीं रहता। उस दशा में कहते हैं, "वह एक ही देखता है, दूसरा नहीं होता।"

क्रमशः

यज्ञ एवं वायुमण्डल

● डॉ. रोचना भारती

वैदिक वाङ्मय में वायु तत्त्व का विशद विवेचन प्राप्त होता है तथा चारों वेदों के स्वाध्याय से भली प्रकार यह तथ्य प्रकट होता है कि प्राणी शुद्ध जल, वायु, अन्नादि को ग्रहण करे। इन तीनों में वायु का प्रमुख स्थान है, क्योंकि जल और अन्न के बिना तो प्राणी कुछ समय जीवित रह सकता है किन्तु वायु के बिना कुछ क्षणों तक भी जीवित नहीं रह सकता, अतः पर्यावरण में सर्वाधिक महत्त्व वायु मण्डल को ही दिया जाता 'आचार्य यास्क' के अनुसार गतिशील होने के कारण और दूसरों को भी गति देने वाली होने के कारण वायु को वायु कहा जाता है–

वायुर्वातेर्वे र्वास्याद्गतिकर्मणः।

निरुक्त– 10.1

वायु का महाभूतों की उत्पत्ति के क्रम में दूसरा तत्त्व है। पृथ्वी, जल, अग्नि की अपेक्षा सूक्ष्म होने से यह सबसे शक्तिशाली है। वायु से सम्पूर्ण पर्यावरण में प्राण–प्रतिष्ठा होती है। अतः ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में लाक्षणिक रूप से इसे, पुरुष के प्राण से उत्पन्न माना गया है–

प्राणाद्वायुरजायत।

ऋग्वेद– 10.90.13

प्राचीन वैदिक साहित्य में वायु की अतिशय महनीयता को स्वीकार करते हुए उसे प्राण कहकर सम्बोधित किया गया है–

प्राणाहुर्मातरिश्वानं वातो ह प्राण उच्यते।
प्राणो ह भूतं भव्यं च प्राणे सर्व प्रतिष्ठितम्।।

यह वायु प्राण ही है तथा मैत्रायणी संहिता में– **अयं वाव यः** (वायु) **पवन एष प्राणः।** – (अर्थात् वह वायु जो प्रहवमान है), वही प्राण है, कहकर वायु के महत्त्व को दर्शाया है। ऋग्वेदीय ब्राह्मणकार ने ऐतरेय ब्राह्मण 2.38 में वायु को प्राण रूप ही स्वीकार किया है तथा ताण्ड्य महाब्राह्मण 4.68 व गोपथ ब्राह्मण 2.1.26 में सामवेदीय और अथर्ववेदीय ब्राह्मणकार ऋषि भी इस मत से सहमत हैं। वैदिक वाङ्मय में वायु तत्त्व का विशद विवेचन प्राप्त होता है।

अथर्ववेद में वायु को वात कहकर –

वातः प्राणः।

अथर्व. 19.44.5

वात को प्राण का पर्याय माना गया है।

वायु शब्द गत्यर्थक **'वा'** अथवा गत्यर्थक **'वी'** धातु (पाणिनी धातु पाठ अदादि गण) से निष्पन्न होता है। आचार्य स्थौलाष्ठीवी के अनुसार **'इण् गतौ'** से आयु बना है और आयु ही **'वायु'** है – वायु में वकार निरर्थक है अर्थात् आगम है। आचार्य यास्क ने वायु के स्थान में आयु का प्रयोग भी किया है –

निरुक्त – 10.1

अमर कोश में वायु के 20 नाम परिगणित किये गए हैं–

श्वसनः, वायुः, मातरिश्वा, अनिलः, समीरः, मारुत, स्पर्शन, सदागतिः, पृषदश्वः, गन्धवहः, आशुगः, मरुत्, जगत्प्राण, नभस्वद्, पवमानः, समीरणः, वातः, पवनः, प्रभञ्जनः आदि के अतिरिक्त आंधी को प्रकम्पनः तथा वर्षायुक्त हवा को झञ्झावात एवं प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान को शरीरस्थ वायु कहा गया है।

अमरकोश– 1.1.61–63

यजुर्वेद में वायु के प्राणरूप होने का उल्लेख है। कामना की गई है कि प्राण, वायु के साथ उत्तमता के साथ रहे तथा प्राण बल से युक्त हो –

सं ते प्राणौ वातेन गच्छताम्।।

यजु. सं. – 6.10

आचार्य यास्क के अनुसार वायु मृत्यु से रक्षा करती है, अतः मित्र है –

मित्र प्रमीतेस्त्रायते।

यह सींचती हुई वृष्टि करती हुई चलती है, इसलिए मित्र है–

सम्मिनवानो द्रवतीति वा।

यह औषधि, वनस्पतियों को स्निग्ध करती है इसलिए मित्र है–

मेदयतेर्वा।

निरुक्त – 10.2

सब भूत वायु में ही मिल जाते हैं तथा वायु से ही फिर निकलते हैं–

वायुं हि एव सर्वाणि, भूतान्यपियन्ति वायोः पुनर्विसृज्यन्ते।

शत. ब्रा. 11.5.3.11

वैदिक विज्ञान के अनुसार वायु अंतरिक्ष एवं सौर मंडल में 41 प्रकार के वात या मरुद्गण निर्मित होते हैं। पर्यावरण संतुलन के बिगड़ जाने पर इनमें मरुद्गणों में विषमता रिक्तता और खालीपन आ जाता है। इस अव्यवस्था के फलस्वरूप कहा जाता है कि सात प्रकार के भयंकर वात उत्पन्न होते हैं, ये वात अत्यंत विनाशकारी सिद्ध होते हैं। यजुर्वेद में इनका नामशः परिगणन किया गया है।

उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा।

यजु. 39.7

ये सात भयंकर वात हैं – **1. उग्र, 2. भीम, 3. ध्वान्त, 4. धुनि, 5. सासह्वान्, 6. अभियुग्वा और 7. विक्षिप।** यजुर्वेद का ऋषि इन सात मरुद्गणों का नाम लेकर इनकी विनाशक शक्ति को नष्ट करने की सामर्थ्य यज्ञ में है ऐसा मानता है।

वायु पृथ्वी, जल, अग्नि (तेज) के गुणों गन्ध रस रूप को भी आंशिक रूप से धारण किये हुए, मुख्य रूप से स्वतः के गुण **'स्पर्श'** से जानी जाती है। अथर्ववेद में कहा है–

वरुणोऽपामधिपतिः स भावतु।

अथर्व. 5.14.4

(वायु जल का अधिपति है, वह मेरी रक्षा करे।)

महर्षि याज्ञवल्क्य ने वायु को सिकुड़ने वाली और फैलने वाली कहा है –

प्राणो वे समञ्जनप्रसारणम्।

शतपथ ब्राह्मण – 8.1.4.10

वायु विज्ञानवेत्ताओं का भी कथन है–वायु उष्ण होकर फैलती है, फैलने से हल्की होकर ऊपर जाती है और शीतल होने से सिमटती है। सिमटने से भारी होकर नीचे आती है, यही वायु के चलने का नियम है।

वायु के विविध कार्यों एवं गुणों के आधार पर उसे विविध नामों से जाना जाता है – 'अथर्ववेद' के **'प्राण सूक्त'** में इसे सर्वाधार तथा व्यापक कहा गया है। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में भी इसे रस संचारक वायु कहा गया है।

ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में वर्षा कराने वाला वायु कहा गया है।

अथर्ववेद में **'वर्षक तथा शोधक'** मातरिश्वा (वायु) का महत्त्व निरूपित है–

ऋतस्य तन्तुं मनसा मिमानः सर्वा दिशः पवते मातरिश्वा।

अथर्व. 13.3.19

(मातरिश्वा–पवनदेव जल के तन्तु को मापते हुए सब दिशाओं को पवित्र करते है।)

प्राचीन ऋषियों ने औषधियों की वाहक होने से उसे भेषज वायु का महत्त्व दिया है और कामना की है–

तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजम्।

ऋ. 1.89.4

(वायु हमें उस सुखप्रद औषध को प्राप्त कराए।)

संहिता तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में वायु को यज्ञ का प्राण तथा अंतरिक्षस्थ बाधाओं को हटाने वाली तथा यज्ञ में दी गई हवियों को यत्र–तत्र फैलाने वाली कहा गया है–

ये देवा यज्ञहनो यज्ञमुषोऽन्तरिक्षे अध्यासते।
वायुर्मा तेभ्यो रक्षतु।।

काठक संहिता – 5.6

(जो देव अंतरिक्ष में यज्ञ के हन्ता हैं, जो यज्ञ के प्रभाव को रोकते हैं, चोर हैं उनसे वायु मेरी रक्षा करे।)

वायु को गन्धवाहक कहा गया है, यथा –

प्राणेन सुरभि चासुरभि च विजानाति।

जैमिनीय ब्राह्मण – 1.269

(वायु के द्वारा सुगन्धि और दुर्गन्धि दोनों जानी जाती है।)

– ऋग्वेद के वायु देवता वाले मन्त्र में ध्वनिवाहक वायु का महत्त्व प्रतिपदित है। – वायु के वेग से शब्दोच्चारण को श्रवण कराने वाली वाणी सुनने वाले पुरुषार्थी विद्वान् को प्राप्त होती है।

वेद के अनुसार वायु सर्वत्र फैली हुई है और उसे दो भागों में बाँटा जा सकता है। पहली शुद्ध वायु जो श्वास लेने के योग्य है तथा दूसरी अशुद्ध वायु जो श्वास क्रिया के सर्वथा अनुपयुक्त है। वेद में कहा है–

द्वाविमौ वातौ वात आ सिंधोरा परावतः।
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः।।

ऋ. – 10.137.2

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः।
त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईयसे।।

अथर्व – 4.13.2

(अर्थात् जो ये श्वास – प्रश्वास रूप वायु चलती हैं, एक बाहर से फेफड़ों के रक्त तक जाती है दूसरी फेफड़ों से बाहर वायुमण्डल तक पहुँचती है। इसमें पहली मनुष्य को बल प्राप्त कराती है, दूसरी रक्त में जो दोष है उसे दूर करती है।)

(यह शुद्ध वायु औषध रूप होती हुई शरीर में जो रपः = दोष है, मल है उसे बाहर फेंकती है। हे वायु! तुम रोगों की दवा हो। तुम देवों द्वारा प्रेषित गति पूर्वक विचरण करती हो।)

प्रत्यक्ष भूत दो हवाएँ सागर पर्यंत और समुद्र से दूर तक बहती रहती हैं। इनमें से एक हमें बल प्रदान करती है और दूसरी प्रदूषण को बहा कर दूर फेंक देती है।

(शुद्ध वायु हमें नीरोगता प्रदान कर हमारी आयु को बढ़ाती है तथा हृदय रोग को दूर करने में मुख्य औषध का काम करती है–)

वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे।
प्राण आयूंषि तारिषत्।।

ऋ. 10.186.1

वायु हमारा पालक–पोषक व कल्याणकारक है। इसे यह ऋचा व्यक्त कर रही है–

उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा।
स नो जीवातवे कृधि।।

ऋ. 10.186.2

(भावार्थ है कि वायु हमारा पिता और भाई के समान पोषण करने वाला और हमारा मित्रवत कल्याणकारी है, वह हमें जीवित रखता है।)

यददो वात ते गृहेऽमृतस्य निधिर्हित।
ततो नो देहि जीवसे।।

ऋ. 10.186.3

(हे वायु! तेरे घर में अर्थात् तेरे अंदर अमृत का भंडार निहित है उसमें से कुछ अंश हमारे सुखी जीवन के लिए हमें भी प्रदान करता है।)

मनुष्य को वायु प्रवाह का ज्ञान प्राप्त कर तथा वायु को शुद्ध करने की विधि

शेष पृष्ठ 05 पर ☞

नवलेखकों के प्रेरणा स्थान, डॉ. भवानीलाल भारतीय

● डॉ. चंद्रशेखर लोखण्डे

कोई भी धर्म, समाज अथवा संस्था अगर अपने कार्य एवं पहचान को इतिहास के पृष्ठों पर अंकित कर रखती है तो उसके अस्तित्व को कोई मिटा नहीं सकता। मौखिक एवं संवाद रूप में किया गया कार्य समय को प्रभावित तो कर सकता है लेकिन इतिहास उसे अपने पृष्ठों में उतना स्थान नहीं देता जितना उसे देना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था "मेरे व्याख्यानों को लोग सुनते हैं पर बाद में भूल जाते हैं। मैं इससे निराश हूँ।" यह भूल महर्षि दयानन्द ने नहीं की। उन्होंने सिर्फ व्याख्यानों, शास्त्रार्थों अथवा सवाद को ही प्रचार का माध्यम नहीं बनाया बल्कि अपने मन्तव्यों एवं सिद्धान्तों को काल के पृष्ठों पर अंकित कर उसे शाश्वत बना दिया। यदि स्वामी जी ने कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' और 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' आदि 32 ग्रन्थों का निर्माण नहीं किया होता तो आज सम्पूर्ण विश्व उनके विचारों से अनभिज्ञ रह जाता। इतिहास काल और विचारों का अनुगामी होता है, और समाज उसका अनुकरण करता है। स्वामी दयानन्द और उनके परवर्ति विद्वानों ने आर्य समाज के साहित्य निर्माण में बहुत बड़ा योगदान किया है।

डॉ. भवानीलाल भारतीय जी भी आर्य लेखकों की उस अग्रिम पंक्ति में खड़े हैं जिनमें पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरुदत्त, पं. चमूपति, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी वेदानन्द, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय, स्वामी अभेदानन्द आदि दिग्गज लेखक हैं।

आपसे पूर्व आर्य लेखकों की साहित्य निर्माण की शैली वर्णणात्मक, खण्डन मण्डनात्मक एवं प्रमाण दर्शक रही है। सर्वप्रथम आपने आर्य साहित्य में शोध एवं तुलनात्मक शैली का प्रारम्भ किया। 'स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द', 'स्वामी दयानन्द और राजा राम मोहनराय', 'पाश्चात्यों की दृष्टि में दयानन्द', 'लेखक कोष', 'आर्य विद्वानों का परिचय संग्रह', आर्य समाज की संस्कृत साहित्य को देन', 'महर्षि दयानन्द का खोज पूर्ण जीवन' और अन्य पचासों विषयों पर आपने साहित्य निर्मिती की है। आप एक प्रगल्भ एवं उच्च कोटी के अध्यवसायी थे। आपके जाने से आर्यजगत् के साहित्य निर्माण की अकथनीय क्षति हुई है।

आपके जीवन में विद्वत्ता और विनम्रता का सुन्दर समन्वय था। किसी पर क्रोध करते या आवेश में आकर बात करते हुए उन्हें किसी ने नहीं देखा। उनका मिलन सार व्यक्तित्व सभी में आदर भाव उत्पन्न करने वाला था।

लेखन के क्षेत्र में आर्य समाजी ही नहीं, अपितु गैर आर्य समाजी लेखक भी उनसे प्रेरणा लेते रहे हैं। आपके मार्गदर्शन में अनेक शोधार्थी आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धान्तों के लेखन की ओर अग्रसर हुए हैं। मैं भले ही गुरुकुल महा. ज्वालापुर में शिक्षित हुआ हूँ, लेकिन सन् 1996 से आपके साहित्य सृजन को देखकर इस कार्य में अधिक प्रवृत्त हुआ हूँ।

आप दो बार श्रावणी पर्व पर लातूर आये थे तब आपको अपने घर मैंने आमन्त्रित किया था। मुझे याद है मैंने श्री भारतीय जी को स्वामी जी के छत्तीस ग्रन्थों से उनके सिद्धान्तों को संग्रहित करने के कार्य को उन्हें दिखाया था, वे बड़े प्रभावित हुए और यह कहा कि यह कार्य अब तक किसी ने नहीं किया है, यह सुनकर मुझे और स्फूर्ति प्राप्त हुई। आज वह ग्रन्थ 'दयानन्द शिखर सिद्धान्त' ने नाम से पूर्णता की ओर है। उन्होंने एक बार कहा था कि स्वामी दयानन्द के बारे में महापुरुषों के विचार सभी ने लिखे हैं लेकिन आप (चंद्रशेखर) मुस्लिम विद्वानों के स्वामी जी के प्रति क्या मत हैं यह लिखो। मैंने वह भी कार्य पूर्ण किया है। 'मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी' इस पुस्तक के लिए भी डॉ. भारतीय जी ने 2–3 मुस्लिम विद्वानों का परिचय मुझे भेजा जो प्रकाशित है। आप 'शिवाजी द ग्रेट' यह डॉ. बालकृष्ण शर्मा (शाहू महाराज कोल्हापूर युनि. के संस्थापक सदस्य एवं सहयोगी) लिखित पुस्तक का अनुवाद करना चाहते थे पर वह कार्य रह गया। जब भी मैं कोई जानकारी उनसे प्राप्त करना चाहता तो वे फोन पर अथवा पत्र से मुझे कर देते थे। मेरी मराठी में लिखित 'वेदामध्ये पर्यावरण विज्ञान' यह पुस्तक उनके ही कर कमलों द्वारा विमोचित हुई है। 'स्वामी दयानन्द संक्षिप्त जीवन चरित्र' आणि सुविचार 'इसके अब तक पाँच संस्करण निकल चुके हैं, इसके लिए भी आपका हमेशा दिशा निर्देश रहा है। जब एक इतना बड़ा विद्वान् और लेखक मुझ जैसे सामान्य लेखक का मार्गदर्शन करता है तो उसके मन में अन्यों के प्रति कितनी सद्भावना होगी, यह सहज गम्य है।' इन्हीं उच्च गुणों को लक्ष्य कर अभी उनके निधन से 15 दिन पूर्व मैंने 'मैं दयानन्द बोल रहा हूँ' यह पुस्तक उन्हें समर्पित की थी। ऐसे उच्च एवं एक सच्चे गवेषक को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

सीताराम नगर, लातूर,
मो. न. 9922255597

☞ पृष्ठ 04 का शेष

यज्ञ एवं वायुमण्डल

जानकर जीवन को सुखी बनाना चहिये। निम्न ऋचा में कहा है –

मरुतां मन्वे अधि मे ब्रुवन्तु प्रेमं वाजं वाजसाने अवन्तु।
आशूनिव सुयमानह्व ऊतये ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

अथर्व. 4.27.1

(दोषनाशक वायु को मैं नमन करता हूँ। वह मेरे लिये अनुग्रह से बोले और इस बल को, अन्न को सुख के निमित्त अच्छी प्रकार तृप्त करे। शीघ्रगामी घोड़ों के समान उन सुन्दर नियम वालों को अपनी रक्षा के लिए मैंने पुकारा है, वे हमें संकट से छुड़ाएँ।)

वायु हमें अन्न और जल भी प्राप्त कराता है –

अपः समुद्राद् दिवमुद् वहन्ति दिवस्पृथिवीमभि ये सृजन्ति।
ये अद्भिरीशाना मरुश्चरन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।।

अथर्व. – 4.27.4

(भावार्थ है कि ये वायुगण जल को पार्थिव समुद्र से आकाश में उठा कर पहुँचाते हैं और आकाश से पृथ्वी पर छोड़ देते हैं एवं ये समर्थ वायुगण जल के साथ चलते रहते हैं। वे हमें कष्ट से छुड़ाएँ।)

वायु प्रदूषण, जल तथा भूमि प्रदूषण से भी अधिक हानिकारक है, क्योंकि यह सीमित स्थान में नहीं होता और दूषित वायु में श्वास रोक कर कोई भी प्राणी जी नहीं सकता। प्रकृति चराचर जगत सभी दूषित हो जाता है, अतः वायु प्रदूषण को दूर करना परम आवश्यक है।

जो वायु शरीर, रक्त, नस–नाड़ी को शुद्ध पवित्र करती है उसका शोधन यज्ञ करता है– शतपथ ब्राह्मण में कहा है –

अग्नेर्वै धूमो जायते धूमादभ्रमभ्राद् वृष्टिरग्नेर्वा एता जायन्ते तस्मादाह तपोजा इति।।

श. ब्रा. काण्ड 5, अध्याय 3.17

(अर्थात् जो यज्ञ में द्रव्य डाले जाते हैं उनसे धुआँ और वाष्प उत्पन्न होते हैं फिर उस वाष्प से अभ्र बनते हैं, उनसे वृष्टि, वृष्टि से औषधि, औषधियों से अन्न, अन्न से धातु, धातुओं से शरीर और शरीर से कर्म बनता है।)

अग्निहोत्र वायु को हल्का बनाता है, जो आकाश में विद्यमान वायुमण्डल को शुद्ध करता है। यज्ञ द्वारा वायुशोधन कार्य को प्रतिपादित करते हुए ऋषि दयानन्द ने कहा है–

नैव तेनाशुद्धों वायुः –––––––फलमपि भवितुमशक्यमेवास्ति।
यदा तु खलु तस्मिन–––––– पूर्णत्वादारोग्यादिकं फलमपि जायते।

(अर्थात् अग्निहोत्र के बिना अशुद्ध वायु सूक्ष्म होकर आकाश में नहीं जा सकती क्योंकि वह लघु नहीं है। उसके रहते बाह्य वायु आने में असमर्थ है। अवकाश के न होने से पुनः सुगन्धयुक्त तथा दुर्गन्धयुक्त वायु के विद्यमान होने से आरोग्यादि फल भी प्राप्त नहीं हो सकता। जब उस स्थान में यानी गृह के अग्निहोत्र में सुगन्धि आदि द्रव्यों द्वारा होम किया जाता है, तब अग्नि के द्वारा वायु अणुरूप में पृथक्–पृथक् होकर एवं हल्की होकर ऊपर आकाश में जाती है, आकाश में जाने पर उस आकाश में चारों दिशाओं में शुद्ध वायु गति करता हुआ जब पृथ्वी के गृहादि अवकाश स्थानों में वह हल्की वायु प्रवेश करती है, तब मनुष्य आरोग्य आदि सुखों को प्राप्त करता है।)

वेदों में यज्ञ से वायु की शुद्धि एवं पुष्टि के उपायों का उल्लेख है–

मित्रा हव्यं घृतवज्जुहोता।।

ऋ. –3.59.1,5,7

(पवित्र मित्र वायु के लिए घृत मिश्रित हवि से यज्ञ करें।)

तस्मै वाताय हविषा विधेम।

ऋ. – 10.168.4

(उस वायु की अनुकूलता के लिए हम, हवि आदि से यज्ञ करें।)

सं ते वायुर्मातरिश्वा दधातु।।

यजु. – 11.39

(यज्ञ से शुद्ध हुआ आकाशगामी वायु अच्छी तरह पुष्ट करे।)

अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्।
अपां सि रेत सि जिन्वति।।

यजु. – प्र.खण्ड – अ. 3.12

यह महान् यज्ञाग्नि पृथ्वी में व्याप्त होकर इसका पोषक और संचालक बन जाता है, अंतरिक्ष लोक में यह पर्जन्य से एकीभूत होकर वृष्टि (जल) का रूप धारण कर लेता है और यही यज्ञाग्नि द्युलोक में व्याप्त और सामंज्यसित होकर सूर्य रूप को प्राप्त होती है। अतः यज्ञ के द्वारा मनुष्य प्रत्येक लोक की उच्चतम स्थिति को प्राप्त कर सकता है।

अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन।
अर्कस्त्रिधातू रजसो विमानोऽजस्त्रो घर्मो हविरस्मि नाम।।

यजु. 18.66

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

मैं चक्कियों में साहिब की आज्ञा से नहीं रहता था

● स्व. श्री बलराज भल्ला

यदि डाक्टरों ने जितेन्द्र और रणधीर को अस्पताल की शरण देने से इन्कार किया, तो पाठक यह न समझें कि अस्पताल खाली रहते हैं, कदापि नहीं। प्रकृति ने इस जगत् को इस तरह रचा है कि इसके अन्दर 'कारण' एक–दूसरे पर इस तरह असर करते हैं कि हर एक दूसरे के प्रभाव के नीचे आप ही परिवर्तित हो जाता है। जेल के अस्पताल में रोगियों की गिनती को बढ़ाने वाला फैक्टर डाक्टरों का स्वार्थ है। यदि दवाखाने के अन्दर सौ बीमार होंगे, तो वे सौ की खुराक में से अपना हिस्सा निकाल सकते हैं। यदि दो सौ हों, तो स्वाभाविकतया उनको दो सौ का हिस्सेदार होने का मौका मिल सकता है। इसी तरह इस गिनती को घटाना भी उन्हीं के इण्टरेस्ट में है। यदि बीमार बहुत हो जायें, तो इसका तात्पर्य यह है कि जेल का स्वास्थ्य खराब है और डॉक्टर अपने काम पर ध्यान नहीं देते। इसलिए डॉक्टरों का काम अस्पताल की गिनती नीचे रखना होता है। जो कमी उन्हें इस तरह होती है, उसे वे दूसरी तरह पूरी कर लेते हैं। खास बीमारों को छोड़ कर बहुतों पर टैक्स लगा दिया जाता है। जो लोग डॉक्टर की फ़ीस नहीं दे सकते, वे इलाज से महरूम रह जाते हैं। शुकर तो इस बात का है, इन डॉक्टरों की फ़ीस दो आने से लेकर एक रुपये तक ही होती है। इसलिए बहुत कैदी इस भार को उठाने के असमर्थ नहीं होते। तो भी कइयों के लिए दो आने जमा करना भी कठिन होता है और वे कई सप्ताहों तक अस्पताल में दाखिल नहीं हो पाते। डॉक्टरों के साथ न्याय करने के लिए यह कह देना भी आवश्यक होगा कि उनके लिए यह जानना, कौन वस्तुतः बीमार है और कौन बनावटी –बीमार है, अतिकठिन है। दोबारे कैदी जेल को अपना घर समझते हैं। कई कैदियों को मैंने पाँच साल के अरसे में तीन बार जाते और आते देखा। चोरी करना, जुआ खेलना उनका स्वभाव हो चुका है। कोई तो चक्की का पुड़ चुराने में सात साल पा जाता है। कोई चनों की गठरी उठा लेने में दस साल भुगता जाता है। तीन आने की चोरी कर बीस साल के लिए जेल में आ जाना उन लोगों के लिए कोई नयी बात नहीं। पौष और माघ के दिनों में जब सुबह के समय जेल के कपड़ों में हाथ खोले नहीं बनते थे, मैं कई बार सुना करता था 'बाबू जी, मुझे तंग मत करो, मैं तो आगे ही गर्म हो रहा हूँ।'

ये लोग गर्म किस तरह हो जाते थे? वहां कोई आग तो रखी नहीं होती थी। जुआ ही इनको हरदम गर्म रखता है। ये लोग हकीम तो नहीं, परन्तु ऐंटी–हकीम अवश्व होते हैं। डॉक्टर तो बीमारी से शफ़ा करना जानते हैं और ये घड़ियों–घण्टों में दस्त, बुखार, सोजिश, जखम और क्या कुछ नहीं भगा देते। जो कोई पुराना कैदी दारोगा व किसी अफ़सर से तंग आ जाता है, झट अस्पताल की पनाह ले लेता है। मौला मुंशी गलीचे वालों का उस्ताद हुआ करता था। एक रोज उसका गलीचा खराब हो गया। मैंने पूछा, ''अब क्या करोगे? क्या सख्त सजा मिलेगी?'' उसने हँसकर कहा, ''सजा कैसी? नौ महीने तो कैद है, अस्पताल से ही रिहाई लूँगा, सजा देने वाला कौन है?'' मैं हैरान था, यह चंगा–भला आदमी अस्पताल में नौ महीने कैसे रह सकता है? दूसरे दिन ही मौला टुबर–क्लोसिस की बीमारी में अस्पताल दाखल हो गया। मैं उसे कभी–कभी मिलने जाया करता था। मैंने पूछा, ''क्या बंदोबस्त किया?''

''वाह, इसमें क्या मुश्किल थी? रुपया महीना डॉक्टर को देना कर लिया है। नौ रूपये में काम बन जाएगा। इस पर दूध, मांस, चीनी और घी मुफ्त का। क्या यह सौदा महंगा है?'' मौला ने उत्तर दिया।

''नहीं, मैंने पूछा, पर साहिब को कैसे धोखा देते हो?''

''साहिब की क्या मुश्किल है?'' मौला ने जवाब दिया। ''वह तो दिनभर में एक घण्टे के लिए आता है। अगर छोटे डॉक्टर अपने हों, तो फिर क्या कर सकता है?''

''आख़िर थरमामीटर तो साहिब खुद लगाता है।'' मैंने कहा।

''बेशक, ''मौला ने जवाब दिया।'' अव्वल तो टुबरक्लोसिस में नौ–दस बजे बुखार की ज़रूरत ही नहीं, अगर कभी हो भी, तो मै बैठे–बैठे अब 102 कर सकता हूँ। इन थरमामीटरों का क्या है?''

निस्सन्देह जो ढंग उसने मुझे बतलाया, उससे थरमामीटर की गलत टेम्परेचर दे देना कोई मुश्किल काम न था। शायद यह कहना तो निरर्थक ही होगा कि वह मौला नौ महिनों के बाद अस्पताल से ही रिहा हुआ।

दूसरी तरफ मुझे एक और भी नक्शा खींचना है। पोलिटिकल कैदियों की हालत अजीब है। वे न तो इन नाजायज़ फायदों को इस्तेमाल कर सकते हैं और न ही उनके लिए सरकार की ओर से कोई विशेष सुभीता ही दिया जाता है। दरअसल इस सरकार ने भी एक अजीब ढोंग रच रखा है। जब सवाल नंबरदारी या ऐसी रियायतों का होता है जो आम कैदियों को दी जाती हैं, तो कहा जाता है कि एक पोलिटिकल कैदी को उसके पोलिटिकल होने की वजह से ये कन्सैशन नहीं दिये जा सकते। परन्तु जब इसी आधार पर उन हकूकों के लिए प्रार्थना की जाती है जो हर देश में राष्ट्रीय कैदियों को मिलते हैं, तो जवाब मिलता है 'हकूक कैसे? जैसे दूसरे कैदी वैसे तुम।' जब सरकार की तरफ से ही ऐसा निर्हेतुक सलूक होता है, तो जेल के अफ़सरों से किसी निष्पक्ष व्यवहार की आशा रखना महज़ गलती है। केहर सिंह एक पोलिटिकल कैदी था। वह हजीरों की बीमारी में ग्रस्त था। कुछ देर तो उसे चक्की में ही रखा गया, परन्तु जब वह अस्पताल में लाया भी गया, तो भी उसको एटैण्डैण्ट देने से इन्कार किया गया। अस्पताल के अन्दर भी उसे एक कमरे में अकेला बंद रखा जाता था और कोई दवाई या पानी देने वाला उसके निकट न होता था। दूसरे बीमारों की सेवा करने के लिए साधारण कैदी मुकर्रर कर दिये जाते हैं। पंजाब में शाहपुर का जेल तपेदिक के बीमारों के लिए खास तौर पर मुकर्रर (नियत) है, परन्तु उसे वहाँ भी भेजा न गया। जब वह अपने काम–काज के लिए कोई एटैंडैण्ट माँगता था, तो साहिब कह देते थे 'हम तुम्हारे लिए किसी और कैदी की ज़िन्दगी खतरे में नहीं डाल सकते।' एक साल के बाद उसका चालान हज़ारी बाग कर दिया गया। साधारणतया कैदी लोग कभी–कभी चालान से बचने के लिए बुख़ार चढ़ा लिया करते हैं, क्योंकि बीमार कैदी को एक स्थान से दूसरे स्थान भेजा नहीं जाता। परन्तु केहर सिंह को नौकरशाही ने तीन व चार दिन के लंबे सफ़र पर भेजने से भी गुरेज न किया, हालांकि उस समय वह बिस्तरे पर था। कहते हैं हज़ारी बाग पहुँचने के चंद महीने बाद ही वह इस संसार से कूच कर गया।

जेल के पुराने पंछी, चाहे वे साहिब हों या जेलर, बाबू हों या डॉक्टर, जमादार हों या कैदी, ऐसे चालाक और चतुर होते हैं कि उन्हें बदमाशी करते पकड़ना अगर नामुमकिन नहीं, तो कठिन अवश्य है। ये लोग हर एक काम को ऐसे ढंग से करते हैं कि बाहिर के लोग तो उसको समझ तक नहीं सकते। सुपरिंटैण्डैण्ट भी चाहे कैसे ही चालाक हों, जेलर लोग उनकी छाया के तले ही सब तरह से अपना मतलब हल करते हैं। नये कैदी भी बरसों जेल की हकीकत समझ ही नहीं सकते। सैण्ट्रल जेलों के अन्दर अक्सर एक वाक्य का प्रयोग किया जाता है, जो बहुत ही अर्थपूर्ण है। जब कोई नया कैदी आता है, तो पुराने उससे पूछते हैं 'कितनी?' यदि उसका उत्तर 'तीन साल' या उससे कमती हो, तो आसपास के कैदी जरूर हँसकर कह देते हैं 'वाह, तो आने की ही क्या ज़रूरत थी? तीन साल में तो बाटियें भी साफ़ नहीं होतीं।' यद्यपि ये शब्द बिल्कुल ठीक नहीं, तो भी इनका अर्थ स्पष्ट है। तीन साल के अंदर मनुष्य जेल के आन्तरिक रहस्यों को मुश्किल से ही समझ सकता है। जब मैं जेल में दाखिल हुआ, तो मेरा मन यह न मानता था कि दारोगा और उसके नाम से उसके नीचे के लोग रिश्वत लेते हैं। दारोगा के अर्दलियों को तो मैंने रुपये लेते शीघ्र ही देख दिया, परन्तु अब भी मुझे संदेह रहा कि शायद ये लोग अपने पद का फायदा उठाते हों और दारोगा बेचारा इनकी शरारतों से बेखबर ही हो। एक साल के अन्दर मैंने अपने कानों से एक कैदी को दारोगा से अर्ज़ करते सुन लिया, ''दारोगा जी, मुझे ताना बुनने से बदल दिया जाय, मैं तारीख भर दूँगा।'' परन्तु अब भी मेरे अन्तरहृदय में संदेह रहा कि शायद इस कैदी ने भी गलती की हो। वह समझता हो कि दारोगा लेने वाला है, इसलिए उसने ऐसा कह दिया हो। मैंने दारोगा का उत्तर नहीं सुना, मैं उसके विरुद्ध फैसला कैसे दे सकता हूँ? यहाँ तक मुझे याद है, तीन या चार साल के बाद मुझे हर एक बात का सबूत मिल गया और मुझे इस बात की तसल्ली हो गयी कि ये सब लोग रिश्वतखोर हैं। मुझे मुलतान जेल में आये छह–सात महीने व्यतीत हुए थे। मैंने दारोगा से प्रार्थना की, मुझे चक्कियों में से निकाल कर बारक में भेज दिया जाये। गर्मी के दिनों में चक्कियाँ, दोज़ख से– अगर जेल को छोड़ और भी कोई दोज़ख है– किसी कदर कम नहीं होतीं। एक तो हवा का नाम ही नहीं होता और दूसरे रात–भर टिड्डियाँ काट–काट कर खाती हैं। इसके अलावा महीनों, बिना किसी से बातचीत किये अकेले पड़े रहने का दुःख भी अक्सर लोग अनुभव करते हैं। दारोगा ने मुझे विश्वास दिलाया कि वह मेरे से बड़ी सहानुभूति रखता है। परन्तु मेरे बारे में गवर्नमैंट के विशेष हुकम होने के कारण वह स्वयं कोई बात करने को असमर्थ है, और वह मुझे इस दुःख से छुटकारा दिलाने का प्रयत्न अवश्य करेगा। दारोगा की सलाह से मैंने यह बात साहिब के कानों तक पहुँचायी, परन्तु उसने मुझे कोई उत्तर न दिया, यद्यपि मुझे इतने लम्बे अरसे के लिए चक्की में रखना कानून के विरुद्ध था। कई मास व्यतीत हो गये और मैं अभी तक चक्की में ही बंद रहता। दारोगा जब कभी उधर से गुजरता, मेरे साथ सहानुभूति कर जाता और कहता 'मैं क्या करूँ, साहिब नहीं मानता।' मुझे भी दारोगा की बात में विश्वास था। एक तो इतना बड़ा आदमी–वह मुल्तान–समाज का उप–प्रधान भी था–झूठ बोल ही कैसे सकता है? दूसरा उसे आवश्यकता ही क्या थी कि वह एक कैदी के आगे झूठ बोले? परन्तु जेल के पुराने पक्षी सदा मुझे कहा करते थे– ''बाबू जी, तुम अभी दारोगा के ढंगों को नहीं जानते, ये तो अपने संग वालों से भी धोखा करने से नहीं टलते। हम नहीं मानते कि कोई काम दारोगा करना चाहे और साहिब उसको करने न दे।'' मुझे कभी–कभी तो इन बातों से दारोगा पर शक हो जाता, परन्तु, फिर मुझे उस पर विश्वास आ जाता। मैं रोज़

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

भगवान बुद्ध द्वारा स्वीकारे हुए आर्य तत्त्व!

● **स्वामी देवानंद सरस्वती**

सृष्टि उत्पत्ती से महाभारत तक भूगोल में वैश्विक चक्रवर्ती साम्राज्य 1960848041 वर्ष था। 49021201 वर्ष महापुरुषों ने साम्राज्य किया था।

सातवें मन्वन्तर के आठ्ठाईसवें महायुग के चौथे कलियुग के 41वें वर्ष में वैश्विक साम्राज्य का विघटन विभाजन हुआ। उसके पश्चात् कुरुवंश के 28 पीढ़ियों ने इन्द्रप्रस्थ से रविखंड पर 1734 वर्ष 11 मास 10 दिन साम्राज्य किया। कलियुग सवत् 1772 में इन्द्रप्रस्थ से कुरुवंशजों का साम्राज्य समाप्त हुआ था।

कलियुग संवत् 2500 में तत्कालीन दक्षिण–पूर्व–पश्चिम एशिया भरत खंड कहलाता था।तब भरत खंड में बारह साम्राज्य थे। पश्चिम में हस्तबल, पश्चिम–उत्तर में गांधार, मध्य–उत्तर में शांधाय, उत्तर–पूर्व में मंडाले, दक्षिण–पूर्व में जाकार्ता, मध्य–पूर्व में श्रीवास्तु (महाकौशल, मध्य–उत्तर–पश्चिम में पुरुषपूर, उत्तर–दक्षिण में इन्द्रप्रस्थ, पश्चिम–मध्य में आवंतीका तथा प्रतिष्ठाण, मध्य–पूर्व में जगनाथ पूरी, दक्षिण में कुम्भकोणम साम्राज्य।

महाकौशल साम्राज्य का सम्राट रहे प्रसन्नचित्त मेघवंशी अधिनस्थ शाक्यगण राज्य–राजधानी कपिल वस्तु राजा जयसेन सचदेव का पुत्र सिंहनाद, रानी कांचन देवी के पुत्र शुद्धोधन, धन्नोधन, सुशोधन, आमितोधन पुत्री सुमितोधन एवं प्रमितोधन।

देवदेह का राजा अजून देव शंखपाल रानी सुलक्षणी की पुत्री महामाया तथा गौतमी दोनों का विवाह युवराज सुशोधन जी से सम्पन्न हुआ था।

सिंहनाद जी के मृत्यु उपरांत शुद्धोधन कपिलवस्तु के नरेश बनते ही उस समय में रानी महामाया को सिद्धार्थ हुए थे तब आचार्य आसित मुनि ने सिद्धार्थ परिव्राट बनेंगे ऐसी भावी भविष्यवाणी कही थी। – कलि संवत् 2547

कपिलवस्तु से देवदेह जाते समय महामाया लिम्बिनिवन में प्रसूत हुई थी – कलि संवत् 2547

युवराज सिद्धार्थ गौतम की शिक्षा कपिलवस्तु नगरी में आनंद भवन राजमहल में प्रारंभ हुई तब वे आठ वर्ष के थे। उनके शिक्षक श्रीराम चतुर्वेदी श्रीध्वाज त्रिवेदी, श्री लक्ष्मी द्विवेदी, श्री कुण्डल मिश्र श्री सुयम उपाध्याय, श्री सुनित शर्मा, श्री सुभोग अहामात्रा थे।

सिद्धार्थ गौतम ने विविध भाषा खगोल, भूगोल, ज्योतिष, गणित, विज्ञान, आयुर्वेद, धनुर्वेद पढ़ी थी।

पाली नगरी के नरेश पीण्डपानीग्रही चक्रधर की कन्या यशोधरा के संग सिद्धार्थ गौतम का मंगल परिणय हुआ तब वे 17 वर्ष के थे।

आयु के 20 साल में सिद्धार्थ को शाक्य संघ का गणराज का युवराज नियुक्त किया गया।

रोहीणी नदी के पानी के बटबारे के कारण शाक्यों का कोलीओ से हुए युद्ध में मानव संहार देखकर सिद्धार्थ गौतम ने शाक्य राज्य का युवराज पद का त्याग किया तब वे 28 वर्ष के थे।

कपिलवस्तु नगरी में कपिलमुनि के आश्रम पहुँचकर सिद्धार्थ गौतम ने आचार्य भारद्वाज से वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा लेकर तथागत गौतम शाक्य मुनि बने। तत्पूर्व उन्होंने माता–पिता, पुरोहित, मंत्री, प्रधान, पत्नी से विमर्श किया था। सेवक छांदोग्य छंद कंथक घोड़े पर सवार होकर ओनाम नदी के पार तथागत गौतम को छोड़ कर लौटा था। कपिलवस्तु से 400 मील दूरी पर राजगृह पहुँचकर तथागत पहाड़ों पर रहने लगे। वहाँ पहुँचकर मगधराज ब्रहमेश्वर प्रसाद (बिंबिसार) ने श्रीवास्तु तथागत जी का उपदेश एवं आशीर्वाद लिया।

राजगृह से श्रीवास्तु पहुँचकर तथागत ने सम्राट प्रसन्नचित से भेंट लेकर विमर्श किया तथा आलार कलाम के आश्रम में रहकर वहाँ उन्होंने साख्य एवं योग दर्शन का अध्ययन किया। वहाँ से वे भृगुऋषी के आश्रम पहुँचे। वहाँ उन्होंने आश्रम का निरीक्षण एवं अवलोकन किया तथा ऋषीवर से परामर्श लेकर चल पड़े तथा फालगुणी नदी के किनारे राजर्षि निरह गिरी के आश्रम गया पहुँचे।

गयाजी के घोर जंगल में तथागत गौतम ने कठोर तपस्या की, बोधिसत्त्व वृक्ष के नीचे पद्मासन में बैठकर बाह्यान्तराक्षेपी प्राणायाम करते समय तथागत गौतम जी को प्रज्ञानब्रह्म ज्ञान प्राप्त हुआ तब से वे श्रमण गौतबुद्ध नाम से संबोधित किये गये। कलिसंवत् 2582

कलिसंवत् 2583 में तथागत श्रमण गौतम बुद्ध जी ने बौद्ध धर्म की, भीखू संघ की स्थापना की थी तब उनके श्रमण गणाचार्य पछक्यान, संजय केशी कांबली, गोशाकी गोसाल, वेलाठी, पुरण काश्यप, बनाये गये।

तथागत बोधिसत्त्व गौतम बुद्ध जी ने अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया तथा मगधराज बिंबिसार को धम्म दीक्षा दी तथा श्रावति के कौशल साम्राज्य का आमात्यसुहन को धम्म प्रवज्या दी, श्रावति के श्रेष्ठी आर्य अनाथ पूरण पथिक (आनाथ पीण्डक) जी को प्रावज्या दी।

उत्तरावती में 500 ब्राहमण, वैश्य, क्षत्रिय, शुद्ध, रोगी, चोर, चांडाल, डकैतों को धम्म दीक्षा प्रवाज्या दी। अपनी माता गौतमी तथा पत्नी यशोधरा, पुत्र राहुल, वैद्यराज जीवक निघूण्डनाथ पूत, उछूक्त रामपूत, वाराणसी के महाथेर कश्यप, उपली नाई, सुयम श्रुद्रादि को धम्मदीक्षा प्रावज्या दी।

तथागत गौतम बुद्ध ने धम्म परिवर्तन शुरू किये, तत्कालिन भरत खंड के सभी सम्राट, गणराजा, प्रजाजन को धम्म दीक्षित किया था। सम्पूर्ण भारतवर्ष धम्ममय किया। कलिसंवत् 2584 से 2645 तक यह सिलसिला चलता रहा तब से बुद्ध भगवान कहे जाने लगे थे।

बुद्ध ने संस्कृत पढ़ी नहीं थी। उन्होंने वेदों का अध्ययन किया नहीं था तो भी उन्होंने आर्य तत्त्वों को स्वीकार किया। आष्टांग मार्ग बताया, पंचशील बताया, निर्वाण बताया, धम्म बताया, विपश्यना बताया, त्रिपीटक बताया था।

तृष्णा, लोभ, काम क्रोध, ईर्ष्या, द्वेश्य, दंभ, अहंकार का त्याग यानी निर्वाण मार्ग कहा। धारणा, ध्यान, समाधि यानी विपश्यना मार्ग कहा। सत्य, अहिसा, अस्नेय, ब्रहमचर्य अपरिग्रह शोध संतोष स्वाध्याय तप, दान यह यम नियम यानी आर्य तत्त्व, व्यसन नहीं करना झूठ नहीं बोलना, चोरी नहीं करना, दुष्टता नहीं करना, दुर्व्यवहार नहीं करना यह शील कहा।

सम्यक भावना, सम्यक विचार, सम्यक ज्ञान, सम्यक संकल्प, सम्यक सदाचरण, सम्यक सदकर्म, सम्यक सुख आष्टांगमार्ग बताया।

आयु के 75वें वर्ष में तथागत श्रमण गौतम बुद्ध महाकौशल राजधानी श्रीवास्तु में श्रेष्ठी तथा गणाचार्य अनाथ पिण्डक जी के तेजवन में रहकर वे चारण करते रहे। वहाँ से कुकूटा नदी किनारे भिखू संघ में रहने लगे। वहाँ से वे हिरव्यवती नदी किनारे पर शाकी वन में कुशीनारा के मल्ल देश में रहने लगे। वहाँ उन्होंने सुभाद्र को अंतिम उपदेश तथा छम्मदीक्षा दी।

इच्छा मृत्यु प्राप्त किये हुए भगवान गौतम बुद्ध ने परिचारक आनंद महाथेर को कहा, उस अनुसार उन्होंने वैशाख पुनम की मध्य रात्रि के बाद पंच भौतिक देह का त्यागकर महापरि निर्वाण किया। मल्लराज ने सप्त के अपरान्हन में हिरव्यवती मुकूट मणी वन्दन चैत्यभूमी में तथागत बुद्ध भगवान महाराजा की पंच भौतिक पार्थिव देह की अंत्येष्टि की महाथेर काश्यप ने भण्डाग्नी दी।

महात्मा बुद्ध ने अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया नहीं था उनके भिखू संघ में संघर्ष होकर दो दल निर्माण हुए (1) महायान (2) हीनयान पंथ निर्माण हुए, उनके श्रमणो ने त्रिपीटक ग्रंथों की रचना की – (1) सत्य त्रिपीटक (2) विनय त्रिपीटक (3) आमिधम्म त्रिपीटक थे, इन पर बहुत रचना की गई थी। कलिसंवत् 2646 वैशाख पुनम रात्रि महा परिनिर्वाण हुआ आयु 88 वर्ष।

आर्य समाज पथ्रोट
जिला अकोला (महाराष्ट्र)

☞ *पृष्ठ 06 का शेष*

मैं चक्कियों में साहिब की ...

देखता कि साहिब बकता ही रहता है, परन्तु दारोगा अपनी मनमानी करता है। तो भी मैं यह समझता कि मेरा केस एक खास है। एक रोज़ अकस्मात् ही मेरी आँख खुल गयी। इतवार का दिन था। मैं डॉक्टर साहिब के मुलाहज़े के लिए अस्पताल गया। मेरे पीछे चक्कियों में खाना तकसीम हो गया। वार्डर ने खाना बनाने वालों को कह दिया, 'बाबू अस्पताल में है, वह खाना वहीं से ले लेगा, तुम जाओ।' अस्पताल में मैंने खाना इस ख्याल से न लिया कि मेरी रसद चक्कियों में आ गयी होगी। मैं जब अपनी कठोरी में वापिस आया, तो मैंने अपना खाना वहाँ मौजूद न पाया। इसलिए मैं एक जमादार के साथ लंगर में अपनी रसद लेने चला गया। साहिब उस समय लंगर का ही मुलाहज़ा कर रहे थे। मुझे यह बात मालूम न थी। इसलिए हम दोनों का मेल दरवाज़े पर हो गया। साहिब ने समझा, शायद मैं फालतू रोटियाँ लेने आया हूँ। इसलिए उसने मेरे से वहाँ आने का कारण पूछा। जब मैंने सब हाल कह सुनाया, तो आप मेरे से पूछने लगे 'तुम चक्कियों में गये क्यों? मैंने उत्तर दिया 'मैं रहता ही वहाँ हूँ।' आपने हैरानगी से फिर कहा क्यों? तुम को वहाँ किसने रखा है? जेलर, क्या बात है?' दारोगा यह कहता हुआ 'हज़ूर बतलाता हूँ, चलिए।' साहिब को एक तरफ ले गया। वहाँ उनकी क्या बात हुई, मैं नहीं कह सकता। परन्तु मेरा विश्वास है, जेलर ने अवश्य कहा होगा– 'हजूर, यह खतरनाक कैदी है, इसलिए चक्कियों में रखा गया है।' क्या–कुछ क्यों न कहा हो, एक बात तो साफ़ है। मैं चक्कियों में साहिब की आज्ञा से नहीं रहता था।

क्रमशः

देहली–बम–रहस्योद्घाटन से साभार

यज्ञ की सटीक व्याख्या जैसा मैंने समझा

● खुशहाल चन्द्र आर्य

यज्ञ केवल अग्नि में घी, सामग्री, समीधा (लकड़ी) मन्त्रों सहित डालने का नाम ही नहीं है, यह तो केवल प्रतीक मात्र है, बल्कि यज्ञ वे सभी कार्य है जो परोपकार व जनहित की दृष्टि से किये जाते हैं, वे सभी यज्ञीय कार्य हैं। जैसे यज्ञ करने वाले का घर तो सुगन्धित व पवित्र होता ही है, साथ ही यज्ञ करने वाले का पड़ौसी चाहे वह उसका शत्रु ही क्यों न हो उसको भी लाभ पहुँचता है। इसीलिए वेदों में **'यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्म'** कहकर यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म बताया है। वेद के एक दूसरे मन्त्र में कहा गया है कि **'स्वर्ग कामो यजेत'** यानी स्वर्ग की कामना रखने वाले को यज्ञ करना चाहिए। अर्थात् यज्ञ करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है जो मानव का परम् लक्ष्य है।

यह शब्द यज् धातु से बना है जिसका अर्थ है देवपूजा, दान व संगति करण। यह तीनों चीजें एक यज्ञीय परिवार पर लागू होती हैं। परिवार में तीन किस्म के सदस्य होते हैं। (1) छोटे बच्चे (2) माता–पिता, वृद्धजन तथा बाहर से आये विद्वान्जन (3) युवा भाई–बहन। देव पूजा के दो अर्थ हैं। पहला अर्थ परिवार सम्बन्धी है यानी छोटे बच्चे यज्ञ करने के पश्चात् खड़े होकर अपने माता–पिता, वृद्धजन व बाहर से आये विद्वानों को नतमस्तक होकर श्रद्धापूर्वक पैर छूकर नमस्ते करके उनका आदर–सत्कार करना। पूजा का अर्थ किसी का आदर–सत्कार करना या किसी का सद्उपयोग करना होता है, न कि चन्दन–रौली का टिक्का करके दीपक लेकर आरती उतारना होता है। पूजा के गलत अर्थ से केवल देश को ही नहीं सम्पूर्ण मानव जाति को बड़ी हानि उठानी पड़ी है। यही गलत पूजा अन्धविश्वास व पाखण्ड को बढ़ाने में बड़ी सहायक सिद्ध हुई है। दूसरा अर्थ है पाँच जड़ (अचेतन) देवता वे है, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी और आकाश। इन पाँचों जड़ देवताओं का मुख अग्नि है। जिस प्रकार मुख से खाया हुआ अन्न, पेट में जाकर उसका रस व खून बनता है और फिर वह नस–नाड़ियों द्वारा पूरे शरीर में पहुँचकर शरीर को स्वस्थ बनाता है, उसी प्रकार हवन में डाला हुआ घी, सामग्री व समिधा, उनकी सुगन्धी हज़ार गुणा बढ़कर पूरे वायुमण्डल यानि जल, पृथ्वी, हवा व आकाश में फैल जाती है और उनको शुद्ध व पवित्र कर देती है। जिससे पूरा वायुमण्डल शुद्ध व पवित्र हो जाता है और प्रत्येक जीव के लिए स्वास्थ्य वर्धक बन जाता है। इसीलिए हमारे ऋषि–मुनियों ने नित्य हवन (यज्ञ) करने का विधान बनाया है। यज्ञ करने का दूसरा कारण यह भी है कि प्रत्येक मनुष्य अपने मल–मूत्र, पसीना तथा अन्य तरीकों से वायु मण्डल के कुछ भाग को गन्दा व अशुद्ध करता है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य बन जाता है कि उतना ही वह वायुमण्डल को शुद्ध व पवित्र यज्ञ द्वारा करे, ताकि पूरा वायुमण्डल शुद्ध बना रहे।

परिवार में दूसरे किस्म के सदस्य हैं माता–पिता व वृद्ध जन, जिनके लिए दान शब्द का प्रयोग हुआ है। इसका तात्पर्य यह है कि छोटे बच्चे जब हवन के बाद अपने माता–पिता तथा वृद्धजनों का पैर छूकर सादर नमस्ते करके उनका आदर–सत्कार करते हैं, तब उनका भी कर्त्तव्य हो जाता है कि वे बच्चों को आशीर्वाद देवे तथा अपने अनुभवों का ज्ञान देवे। इनको दान की संज्ञा दी है। दान वह होता है जो निःस्वार्थ भाव से, बिना कुछ लेने की आशा से दिया जाता है। इसलिए वृद्धजनों के आशीर्वाद को दान की संज्ञा दी है। इसका एक दूसरा भी रूप है कि किसी ज़रूरतमन्द को दान देना। यज्ञ एक परोपकारी कार्य है, इसलिए वृद्धों को यज्ञ से दान देने की वृत्ति का भी विकास करना चाहिए।

यज्ञ का तीसरा अर्थ है संगति करण। संगतिकरण के भी दो अर्थ हैं। पहला अर्थ है कि परस्पर भाई–बहन एक दूसरे से प्यार करें, साथ ही बड़ों का आदर–सत्कार व छोटों से स्नेह व प्यार करें ताकि परिवार का वातावरण भेद–भाव, वैमनस्य रहित व प्यार भरा बना रहे तथा परिवार में सुख व शान्ति बनी रहे। इसका दूसरा अर्थ यह है कि यज्ञ में हर चीज़ का संगतिकरण बना रहे, यानि सामग्री में जड़ी–बूटियों की मात्रा उचित हो, घी व सामग्री सही मात्रा में जैसा विधान है वैसे ही डाली जाएँ तथा उठने–बैठने में भी संगतिकरण हो ताकि यज्ञ सुचारू रूप से चलता रहे, और सभी हवन का पूरा लाभ उठा सकें।

यहाँ यह बात भी बतलाना अति आवश्यक है कि यज्ञ को वेदों में **'अयं यज्ञो विश्वस्य युवनस्य नाभिः'** यानी यज्ञ को सम्पूर्ण विश्व की नाभि (केन्द्र) बताया गया है। जैसे पूरा शरीर नाभि से नियन्त्रित होता है, वैसे ही पूरा विश्व, यज्ञ से नियन्त्रित रहता है। इसीलिए यज्ञ की बड़ी महिमा है। यज्ञ हर व्यक्ति को नित्य करना चाहिए। यदि प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ न कर सके तो कम से कम हर परिवार को तो नित्य हवन करना ही चाहिए ताकि परिवार का वातावरण शुद्ध व पवित्र बना रहे तथा परस्पर के व्यवहार में प्रेम बना रहे।

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि मुझे पितृकुल तथा श्वसुर कुल दोनों ही बड़े पक्के आर्य समाजी परिवार मिले। मेरे स्व. पिता गोविन्द राम आर्य, जिनको लोग श्रद्धा से 'प्रधान जी' के नाम से सम्बोधित करते थे। वे एक दृढ़ आर्य समाजी व पक्के ऋषि–भक्त थे। उन्होंने अपने 81 वर्षीय जीवन में अनेक परोपकारी व समाज सुधार के काम किये, जिनमें आर्य कन्या पाठशाला का बीस वर्षों तक एक बड़ी अच्छी अध्यापिका लाकर बड़े अच्छे ढंग से चलाना, बच्चों को दसवीं तक पढ़ाने के लिए धन एकत्रित करके एक अच्छी बिल्डिंग बनाकर सरकार को देना, गाँव में पोस्टऑफिस खुलवाना, अकाल के समय गरीबों की मदद करना व सैकड़ों गऊओं को मृत्यु से बचाना। ढोंग, आडम्बरों व पाखण्डों का डटकर विरोध करना, गो व हिन्दी रक्षा के आन्दोलनों में शामिल होकर जेल की यातनाएँ सहना तथा जो सबसे बड़ा उन्होंने काम किया वह है 8–10 बाल विधवाओं को योग्य पतियों के साथ पुनर्विवाह करवाकर उनका जीवन सुखी बनाना ही नहीं, साथ ही तीन बाल विधवाओं का अपने एक सुपुत्र व दो सुपौत्रों से विवाह करके अपने घर की बहू बनाकर अग्रवाल समाज में एक उदाहरण पेश करना मुख्य था। वे नित्य सन्ध्या व साप्ताहिक पारिवारिक यज्ञ भी करते थे। मेरी धर्म पत्नी विमला देवी के दादा जी, जिनका नाम भालाराम जी था और सभी लोग उन्हें आदर व सम्मान से 'मन्त्री जी' कहते थे। वे नित्य दोनों समय सन्ध्या व हवन करके ही भोजन करते थे। यात्रा में भी यज्ञ का पूरा सामान एक थैले में रखते थे और दोनों समय सन्ध्या, हवन करके ही भोजन करते थे। उन्होंने सन् 1939 में हैदराबाद सत्याग्रह और 1957 में हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी भाग लेकर जेल की यातनाएँ झेली थी। वे पक्के ऋषि–भक्त व सच्चे आर्य समाजी थे। उनका जीवन भी पूर्ण संयमी था। हरियाणा के भजनोपदेशक अपने भजनों में उनका सच्चे आर्य के रूप में उदाहरण पेश करते थे। ऐसे आर्य समाजियों से हमे शिक्षा लेनी चाहिए।

180 महात्मा गान्धी रोड
(दो तल्ला) कोलकत्ता – 700007
मो. 9830135794

☞ पृष्ठ 05 का शेष

यज्ञ एवं वायुमण्डल

अग्नि यज्ञ में होम किए हुए पदार्थों को सूक्ष्म कर वायु में फैला कर, दुर्गन्ध का निवारण, सुगन्ध की प्रकटता और रोगों को नष्ट करके सब प्राणियों को सुखी करता है, वैसे ही सब प्राणियों को होना योग्य है।

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि
मातरश्विनो घर्मोऽसि विश्वधाऽअसि।
परमेण धाम्नादृं५हस्व मा ह्वार्मा ते
तज्ञपति र्ह्वार्षीत।।

यजु. – 1.2

इस मन्त्र में यज्ञ के लिए उपदेश दिया है कि (हे विद्यायुक्त मनुष्य! जो यज्ञ शुद्धि का हेतु है, जो विज्ञान के प्रकाश का हेतु और सूर्य की किरणों में स्थित होने वाला है, जो वायु के साथ तथा जो उत्तम स्थान से सुख को बढ़ाने वाला है, ऐसे इस यज्ञ का त्याग मतकर तथा यज्ञ की रक्षा करने वाला यजमान भी उनको न त्यागे।)

इस मन्त्र में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि यज्ञ, वायु की शुद्धि का हेतु है। यज्ञ के द्वारा जो सुगन्ध उत्पन्न होती है, वह वायु को शुद्ध करती है तथा साथ ही देश–देशान्तरों में फैलकर प्राणियों को सुगन्ध देती है और उन्हें धारण करने में अधिक समर्थ होती है।

पं. वीरसेन वेदाश्रमी वेद विज्ञानाचार्य के अनुसार यज्ञ के द्वारा सूनामी लहरों से समाज की रक्षा की जा सकती है क्योंकि वेद ने समुद्रों से उत्पन्न वायुओं के लिए यज्ञ में आहुतियों का विधान करके यह बताया है कि वायुमंडल में विरलीकरण या घनत्व उत्पन्न करके उनके प्रचण्ड आक्रमण का शमन किया जा सकता है। वेद में स्पष्ट कहा है–

समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा।
सरिराय त्वा वाताय स्वाहा।
अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा।
अप्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा।
अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहा।
आशिमिदाय त्वा वाताय स्वाहा।।

यजु. 38.7

(अर्थात् समुद्री वात के लिए आहुति प्रदान करो, जलभरी हुई गतिमान वायु के लिए आहुति प्रदान करो), अत्यन्त बलवान रौद्र वायु के लिए आहुति प्रदान करो–जो वायु रोकने में असमर्थ प्रतीत होती है ऐसी आँधी –तूफानों वाली वायु के लिए आहुति प्रदान करो– रक्षणकर्ता वायु के लिए आहुति प्रदान करो और क्लेश निवारक वायु के लिए आहुति प्रदान करो।

यज्ञ से होगा सुनहरा कल से साभार

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

● कामता प्रसाद मिश्र

कठोपनिषद् की यह सूक्ति देशवासियों के लिए आज के परिवेश में अति महत्त्वपूर्ण और आचरणीय है, क्योंकि आज देश में भ्रष्टाचार, आतंकवाद, जातिवाद सम्प्रदायवाद, स्वार्थवाद, शोषण और राजनीतिक भ्रष्ट चिन्तन का बोलवाला बढ़ता जा रहा है। दूसरी तरफ धर्म के नाम पर धनोपार्जन, धोखाधड़ी, पाखण्ड और आडम्बर, अंधविश्वास, कदाचार, ईश्वरावतार बनने की होड़, देवी–देवता की बाढ़ बेरोक–टोक बढ़ते जा रहे हैं। समाज में विकृत मानसिकता, आचरणहीनता, आये दिन नाबालिक मासूम बालिकाओं के साथ दुराचार तथा अमानुषिक यौनाचार आदि का बढ़ना अशुभ एवं पतन के संकेत हैं। ऐसी विषम परिस्थितियों को समाप्त करने के लिए सरकार को कठोर कानून बनाने तथा उसका पालन करवाने और कठोर दण्ड देने के लिए आगे आना होगा। वहीं शिक्षकों, मनीषियों, बुद्धिजीवियों, समाज सुधारकों तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, सदाचारी संन्यासियों को समाज सुधार एवं बुराइयों के निवारणार्थ कमर कसने की महती आवश्यकता है। समाज और देश की कुरीतियों और राजनीतिक विकृति के निवारण के यही कारक हैं। जो सदैव समय–समय पर समाज का सुधार करने एवं नवजागरण के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। इनमें स्वामी दयानन्द सरस्वती, राजाराम मोहन राय, महात्मा गाँधी आदि के नाम सदैव स्मरणीय रहेंगे।

उक्तशीर्षक एक श्रेष्ठ, आचरणीय, प्रेरणादायक संदेश और उपदेश है, जिसमें उपनिषदकार ने एक सूक्ति में गागर में सागर भर दिया है। मनुष्य इस सूक्ति की शिक्षा से अपने जीवन, समाज, देश तथा राष्ट्र को स्वस्थ, सबल तथा समृद्धिपूर्ण बना सकता है। इस सूक्ति का साधारण अर्थ यह है – उठो, जागो तथा श्रेष्ठ, सदाचारी, विद्वान् तथा आचरणवान गुरु से श्रेष्ठ ज्ञान–ब्रह्मज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान, भौतिक विज्ञान आदि श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त कर माननीय मूल्यों का आचरण करके राष्ट्रभक्त, श्रेष्ठ मनुष्य, कर्तव्यनिष्ठ तथा देश और समाज को नई प्रगतिशील दिशा दें। ज्ञान का प्रकाश पुंज बनें। यही ज्ञान का प्रकाश समाज और देश को उन्नत बना सकेगा। शतपथ ब्राह्मण में कहा है– **असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।** अर्थात् हे परमेश्वर हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो। अज्ञानता के अधकार से प्रकाश रूपी सद्ज्ञान की ओर ले चलो। यह एक श्रेष्ठ और प्रेरणादायक शिक्षा है, जिससे प्रेरणा प्राप्त होती है कि मनुष्य सत्य और असत्य, शुभ तथा अशुभ, अच्छे और बुरे का ज्ञान, विवेक से समझें और सत्याचरण करें।

श्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त कर ही मनुष्य मानवीय मूल्यों को आचरण में उतारकर तथा उसकी रक्षा करते हुए पुरुषार्थ – अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को प्राप्त करने का यत्न करता है। पुरुषार्थ ही मानवता की रक्षा कर सकता है। वही भौतिकता तथा अध्यात्मिकता का समन्वय करके राष्ट्र को सुदृढ़ तथा सशक्त बना सकता है। वर्तमान समय चारों तरफ विषमताएँ ही दृष्टिगोचर हो रही हैं। सरकारें गरीबी, जनसंख्या वृद्धि, दरिद्रता, बेरोजगारी, महँगाई को मिटाने में असफल हो रही हैं। समाज से भय, शोषण, सुरक्षा आदि रोकने में भी असफल हैं। न्याय व्यवस्था पवित्रता खोकर संदेह के घेरे में है। प्रशासन मनमाना करके समाज के शोषण, उत्पीड़न में संलग्न है। सरकारें जातिवादी तथा सम्प्रदायों की संतुष्टि में तुष्टीकरण नीति अपना कर, पक्षपात करके कुर्सी को बचाने तथा सामान्य जनता की उपेक्षा कर कुर्सी को मजबूत करने में व्यस्त हैं। ऐसी विषम परिस्थितियों में जन–जागरण अति आवश्यक है क्योंकि लोक बेंच में जनता ही सर्वोच्च अदालत है, जिससे सरकारें बनती बिगड़ती हैं।

उपनिषद्कार कहते हैं – उठो! भारतीय संस्कृति की मर्यादा की रक्षा के लिए, स्वाभिमान रक्षार्थ, अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करो, भ्रष्टाचार समाप्त करके आतंकवाद जड़ से नष्ट करो, लोकतंत्र को मजबूत करो, माननीय मूल्यों की रक्षा करो, दोहरे कानून, दोहरी शिक्षा व्यवस्था, भ्रूणहत्या, धर्मान्तरण आदि अनेक समस्यायें मुहवाये खड़ी है। उनकी भारतीय संस्कृति के मूल्यों की रक्षा करते हुए समाधान सुनिश्चित करो। सावधानी से विघटनकारी तत्त्वों को निर्मूल करो।

उपनिषद्कार आगे कहते हैं– जाग्रत–जागो! यहाँ जागने का तात्पर्य है कि लोगों के आलस्य करते हुए जीवन व्यतीत हो गये, आलस्य त्याग कर जागो राष्ट्र कातर दृष्टि से प्रतीक्षा में है, अकर्मण्यता त्याग कर कर्तव्यनिष्ठ बनो। आज देश में बाहुबली की, स्वार्थी धनबली तथा देश को लूटने वालों की संख्या में वृद्धि हो रही है। शिक्षा व्यवस्था चरमरा गई है। अयोग्य आरक्षण के नाम पर सरकारी नौकरियों को हथियाने में सफल हो रहे हैं। घुसपैठिए भारी मात्रा में आकर देश को दीमक की तरह से खोखला करने में संलग्न हैं। घोटाले बाज देश का धन लूट कर विदेश भाग रहे हैं। वैदिक धर्म, संस्कृति तथा सभ्यता को आघात पहुँचाने वाले तत्त्व उच्च शैक्षिक संस्थाओं में पहुँचकर शिक्षार्थियों की मानसिकता बदलने में लगे हैं, जिससे राष्ट्रद्रोह तक के स्वर सुनाई पड़ने लगे हैं। ऐसी अनेक समस्यायें देश के सामने देश को निगलने को तैयार खड़ी हैं। कहाँ तक उनका वर्णन किया जाय। अतः देशवासियो जागो, जागो, जागो। देशवासियो भारत कभी विश्व गुरु था, आपके पास तो बुद्धि, विवेक, बल, शौर्य, धन तथा हर समस्या के समाधान की ऊर्जा है। इनका उपयोग कर देश का कल्याण करो।

हमारा देश भारतवर्ष (आर्यावर्त्त) जो कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था। देश को अनेक आक्रमणकारियों ने लूटा, मुगलों तथा अंग्रेज़ों ने देश को निर्धन, गरीब और असहाय बनाया। देश स्वतंत्र हुआ परन्तु दुःख है कि अंग्रेज़ी संस्कृति के पोषक देश के नेता अंग्रेज़ी पद्धति तथा अंग्रेज़ों द्वारा निर्मित कानून के आधार पर शासन आज तक चला रहे हैं। भारतीय संस्कृति के मूल्यों तथा तत्त्वों को दर किनार कर उसी दमनकारी अग्रेज़ी कानून पर शासन चलाने की नीति का पालन करके जन कल्याणकारी होने का डंका पीटा जा रहा है, जिसमें दोषी शासकों को अपराध करने पर दण्ड से मुक्त किया जाता था और निर्दोष को अपराधी बनाकर दण्डित किया जाता था। यह सत्ता को मजबूत और जनता को असहाय बनाने का अंग्रेज़ी शासकों का कुचक्र युक्त कानून था। आज के देशी शासक उसका भरपूर लाभ उठाकर दोषी होने पर भी निर्दोष सिद्ध करने में लगे हैं, ऐसे लोगों को कौन नही जानता। राजनीति के क्षेत्र में जहाँ मानवतावादी, राष्ट्र भक्त तथा समाजसेवी, ईमानदार हुआ करते थे वहाँ अब राजनीति का अपराधीकरण होता जा रहा है। पहले तो नेता अपराधी का सहारा लेकर विधायक तथा सांसद चुने जाते थे। उसका परिणाम हुआ कि अपराधी स्वयं चुनाव लड़कर संसद तथा विधान सभा पहुँच रहे हैं। जेल में रहकर भी उन्हें चुनाव जीतने में कोई प्रतिबंध नहीं है। भारतवर्ष की सभी पार्टियों में अपराधी उस पार्टी की शोभा बढ़ा रहे हैं। सुप्रीमकोर्ट के बार–बार निर्देश पर भी कोई पार्टी अपराधी मुक्त नहीं बनाना चाहती। इससे पार्टियों की नियत का पता चलता है।

यहाँ यह भी विचारणीय है कि आई.ए.एस. तथा पी.सी.एस. अथवा किसी भी सरकारी पद पर नियुक्ति होने पर यदि किसी के ऊपर एफ.आई.आर. भी दर्ज हुआ है तो उसे उस नौकरी से वंचित किया जाता है, किन्तु एक नेता बड़ा से बड़ा अपराध किया हो, उस पर पचासों अपराधिक केस न्यायालय में चल रहे हो, उसे चुनाव लड़ने और संसद पहुँचने में कोई रोक नहीं है। आज का यह लोकतंत्र कितना स्वच्छ, पवित्र और पारदर्शी हो गया है? लोकतांत्रिक प्रणाली एक अच्छा तथा स्वस्थ लोकतंत्र शासन कहा जाता है परन्तु भारत एक विशाल जनसंख्या वाला देश है। यहाँ लोकतंत्र सरकार स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से चल रही है। लोकतंत्रात्मक शासन के मूल्यों और मान्यताओं का यदि पूर्ण निर्वाह नहीं किया जाता तो वह विकृत होकर लोक कल्याणकारी समाज की स्थापना करने के स्थान पर जनहित विनाश का कार्य करने लगती है। समाज जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, क्षेत्र, लिंग तथा न जाने कितने रूपों में बँटकर वर्ग संघर्ष को जन्म देता है। भारतवर्ष में जो धीरे–धीरे अपना पैर फैलाता दिखाई देने लगा है।

किसी भी समाज और राष्ट्र की चिन्तन शैली से, वैचारिक स्तर से, यहाँ की सभ्यता, रहन–सहन, आचार–व्यवहार और जीवन क्रम की भविष्यत संभावनाओं की बारीकियों की जानकारी होती है। वैदिक युग कभी सतयुग नाम से पुकारा जाता था। उस युग के सभी प्राणी दैहिक, दैविक तथा भौतिक तापों से मुक्त और आनन्द का जीवन जीते थे। इसका कारण साफ है कि उस युग में वेद का पठन पाठन होता था तथा वैदिक मान्यताओं तथा मूल्यों का पूर्ण–रूपेण आदर और सम्मान किया जाता था। अवैदिक कार्य को पाप समझा जाता था। उस युग की चिन्तन पद्धति और वैचारिक स्तर उत्कृष्ट था। उस युग में शिष्य लोग श्रेष्ठ गुरु से श्रेष्ठ शिक्षा गुरुकुलों में रहकर साथ–साथ प्राप्त करते थे। वहाँ ऊँच–नीच, राजा–रंक का कोई भेद नहीं होता था।

आज भारतीय संविधान विधिवेत्ताओं के लिए स्वर्ग बन गया है। उसके प्रत्येक अनुच्छेद का अर्थ विधिवेत्ता स्वार्थ तथा स्वकल्याण के वशीभूत होकर अपने स्वहित हेतु व्याख्या करने लगे हैं। समाज जातियों, वर्गों में बढ़ता जा रहा है जिसका परिणाम लोग भलीभाँति जानते हैं। किन्तु अपने भाषणों तथा वक्तव्यों में सत्यता पर धूल डालने का कार्य प्रत्येक दल का राजनीतिक नेता करता चला आ रहा है। अनेक समस्यायें देश के समक्ष जड़ें जमाती जा रही हैं। राष्ट्रीय जीवन शनैः–शनैः जर्जरित होता जा रहा है। आज के राजनेताओं में राष्ट्रभक्ति, सार्वजनिक कल्याण की भावना भाषणों तक सिमट गई है, एक–दूसरे पर कीचड़ उछालना कार्य मात्र रह गया है। आज का विधायक, सांसद, मंत्री तथा राज्यपाल आदि राजाओं तथा सम्राटों का जीवन जी रहे हैं। पूर्वकालीन राजाओं को आराम और विलासिता के मामले में पीछे छोड़ बहुत आगे बढ़ गये हैं। इन पर कानून लागू नही होता, न्यायालय के निर्णय को बदल देते हैं, क्योंकि कानून के निर्माता हैं। शायद इसीलिए नेताओं का वाणी पर कोई नियंत्रण नहीं है।

अतः आज कठोपनिषद् का संदेश भारतीय जनता के लिए अधिक प्रासंगिक हो गया है। यदि जनता बँटती रही तो समाज नष्ट हो जाएगा। इसलिए उठो, निद्रा, आलस्य त्याग कर राष्ट्र के कल्याण में लग जाओ।

2475 निराला नगर शिवपुरी,
सुलतानपुर उ.प्र.

पत्र/कविता

ज़िन्दगी स्वप्न थी, रात जागने में कटी

ये उदासियों का मंजर, ये खामोशियों के साये
ये बंद अधरों की चुभन, ये चंचल नयन पथराए
चलो गम बांटले 'दिलचस्प', ये समा बदल जाएगा
धरती लहलहा उठेगी, आसमा पिंघल जाएगा।
ज़ख़्म भर जाता है, जब जाम भरे जाते हो
इज्जत तब मिटती है, जब इल्जाम धरे जाते हो
गलत बातों का दर्द न जाता सदियों तक
चाहे 'दिलचस्प' सौ–सौ सलाम भरे जाते हो।
खुद का आशियाना रहा मातमी मरघट सा
घड़ी संगमरमरी बुत तराशने में कटी
कौन जाने 'दिलचस्प' व्यथाओं का मतलब
ज़िन्दगी स्वप्न थी, रात जागने में कटी।
एक मानव बम हजार बना देता है
एक बम मानव हजार मिटा देता है
होता है दिल में दर्द एक, मगर 'दिलचस्प'
आँखों से आंसू हजार गिरा देता है।

दिलचस्प
चूरु– 331001

जीवन की उन्नति के लिए कुछ अनमोल विचार

उन्नति की सम्पूर्ण ऊँचाइयों को छूने का सोपान विद्या है। विद्या वही, जो ईश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि का यथावत् ज्ञान करवाये। सफलता प्राप्त करने का सबसे बड़ा साधन समय का सद्उपयोग है। शरीर व आत्मा को ठीक रखने के लिए धन नहीं अपितु संयम–नियम–सदाचार युक्त मर्यादित रहना जरूरी है।

किसी भी श्रेष्ठ कार्य को कल पर छोड़ना उन्नति में सबसे बड़ी बाधा है। किसी भी घर–परिवार–समाज व राष्ट्र के नियमानुसार अनुशासन में रहने से संगठन शक्ति बढ़ती है। सार्वजनिक नियमों का उल्लंघन करने से समाज व राष्ट्र की बहुत बड़ी हानि होती है। स्वार्थ लालच की जननी है। इससे व्यक्ति का पतन हो जाता है। परमार्थी व्यक्ति स्वयं कष्ट सहकर भी दूसरों को कष्ट नहीं देता। प्राकृतिक ऋण से उऋण होने के लिए प्रत्येक गृहस्थी को दैनिक यज्ञ करना अनिवार्य है। अपने कर्त्तव्य का ठीक पालन करना सबसे बड़ा धर्म है।

आचार्य रामसुफल शास्त्री हाँसी
मो. 9416034759–9466472375

****

किसानों की कर्जमाफीः कुछ सवाल

तीन हिंदी प्रदेशों में चुनाव जीतते ही इन तीनों सरकारों ने किसानों की कर्जमाफी कर दी है। इस कर्जमाफी से इन तीनों सरकारों पर लगभग 50 हजार करोड़ का बोझ आन पड़ा है। मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़–– ये तीनों कृषि–प्रधान प्रांत हैं। शपथ लेते ही कर्जमाफी की घोषणा कर दी, इसने सरकार की छवि आम नागरिकों के मन में चमका दी है। यहाँ पहला सवाल उठता है कि ये तीनों राज्य इस 50–60 हजार करोड़ रु. की राशि लाएंगे कहां से? अपने बजट में ये मुख्यमंत्री क्या काटेंगे और क्या जोड़ेंगे?

इसके अलावा एक सवाल यह भी है कि ज्यादातर किसान बैंकों तक पहुंच ही नहीं पाते। वे तो अपने गांवों के सूदखोरों के कर्जदार बने रहते हैं। उनका कर्ज माफ कैसे होगा? नीति आयोग का कहना है कि कर्जमाफी का लाभ मुश्किल से 10–15 प्रतिशत किसानों को ही मिल पाता है। पिछले 15–20 साल से कर्जमाफी के इस रामबाण को सभी पार्टियाँ चला रही हैं लेकिन क्या देश के किसानों की गरीबी दूर हो रही है? उनकी गरीबी दूर हो न हो, कर्जमाफी का वादा इतना बड़ा लालच है कि उसके कारण नेताओं की गरीबी दूर हो जाती है। वे वोटों की फसल काट ले जाते हैं।

इसमें शक नहीं कि कर्जमाफी के कारण हजारों किसान आत्महत्या करने से रुकेंगे लेकिन हम यह भी न भूलें कि कई किसान इस कर्ज का उपयोग खेती पर करने की बजाय मकान बनाने, कार और बाइक खरीदने और दिखावे पर ज्यादा करते हैं। किसानों को तात्कालिक राहत मिले, इस दृष्टि से एकाधबार कर्जमाफी ठीक है लेकिन उनकी दशा वास्तव में सुधारना हो तो उनकी उपज के लिए कठोर दाम बांधो नीति और फसल बीमा होना चाहिए। उनके लिए बीज, खाद और सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए। यदि यह सब हो तो आखिर किसान का भी स्वाभिमान होता है। वह आपसे कर्ज लेगा ही क्यों?

डॉ. वेदप्रताप वैदिक
dr.vaidik@gmail.com

****

बुढ़ापे को जीवंत बनाएँ?

आपकी पत्रिका से आर्य समाज की जानकारी प्राप्त होती है। आज के समय में आर्य समाज के प्रचार–प्रसार की अत्यन्त आवश्यकता है ताकि सामाजिक रूढ़ियों से लड़ा जा सके तथा समाज का सही विकास हो सके। बुढ़ापे को जीवंत बनाएँ? (कृष्ण मोहन गोयल) लेख सामाजिक है। वृद्ध लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है।

श्रीमती निर्मल सिंघल
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्
भारतीय रिजर्व बैंक शाखा
6, संसद मार्ग, नई दिल्ली– 110001

****

अमरूद (अमृत फल)

आयुर्वेदिक मत – कसैला, मीठा वीर्यवर्धक कफमारक,वातपित्त नाशक, अत्यन्त शीतल स्वादिष्ट मधुर ग्राही, कुछ खट्टा, कुछ कसैला, अत्यन्त तीक्ष्ण, कफनाशक, उन्माद नाशक, पित्त नाशक, वीर्यवर्धक, रूचिकारक, त्रिदोष नाशक, शक्तिदायक, सर्वगुणी, बुद्धिवर्धक।

वैज्ञानिक विश्लेषण– विटामिन सी कैल्शियम फास्फोरस, ग्लूकोज, टेनिन एसिड और आक्छलोट के कारण विटामिन सी से भरपूर दावों के रोगों, पाचन तंत्र को बलदायक, उच्च रक्तचाप नाशक।

यूनानी मत– यूनानी हकीम उन्माद पागलपन वालों को अमरूद विशेष रूप खिलाते हैं।

अमरूद खाने का समय दोपहर को भोजन उपरान्त

उपयोग–

1. अमरूद का सेवन नियमित करने से मल शुद्धि होती है।
2. अमरूद का साग बनाकर खाने से कब्जियत मिटती है।
3. जिनकी पाचन शक्ति कमजोर हो वह अमरूद खायें।
4. सूखी खांसी में खूब चबा–चबा कर खायें।
5. खाने के लिए पके अमरूद का ही सेवन करें।
6. अमरूद के पत्तों की पुलटिस बनाकर फोड़ों पर लगा सकते हैं।

हरिश्चन्द आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
अमरोहा उत्तर प्रदेश

****

आर्य समाज वसंत कुंज में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस का आयोजन

आर्य समाज वसंत कुंज नई दिल्ली की ओर से स्वामी श्रद्धानंद का बलिदान दिवस मनाया गया। सुश्री दीपा मलिक ने स्वामी जी के शुद्धि आन्दोलन की याद दिलाते हुये कहा कि उनका यह शुद्धि आन्दोलन पूर्ण रूप से अहिंसक था जो गांव गांव में वैदिक ज्ञान के प्रचार व प्रसार के माध्यम सम्भव हो सका था। सुश्री दीपा ने कन्या गुरूकुल की स्थापना में उनके महान योगदान को स्मरण करते हुये स्वामी जी के चरित्र की निर्भयता व दृढ़ता को याद किया। उन्होंने स्वामी जी के जीवन चरित पर एक मर्म स्पर्शी काव्य रचना भी प्रस्तुत की।

समाज के प्रधान कमान्डर (अवकाश प्राप्त) बक्शी ने स्वामी श्रद्धानंद के महान योगदानों को याद करते हुये कहा कि स्वामी जी ने अपने निजी अनुभवों के माध्यम से देश की राजनैतिक व आर्थिक दासता को महसूस किया था। वे भय व आतंक से प्रभावित नहीं थे। दिल्ली में रौलेक्ट एक्ट का विरोध जिस शान्ति व साहस के साथ स्वामी जी ने किया था वह अपने में बेमिसाल है। कमान्डर बक्शी ने स्वामी जी के दिल्ली की जामा मस्जिद के ऐतिहासिक भाषण की याद दिलाई। स्वामी जी के महान् त्याग व बलिदान को स्मरण करते हुये ने कहा कि स्वामी जी की आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रति गहरी आस्था थी। उनका सम्पूर्ण जीवन देश की वर्तमान नई पीढ़ी के लिये प्रेरणा स्रोत है।

आर्य समाज शकरपुर में मनाया गया स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज शकरपुर दिल्ली ने आर्य समाज शकरपुर के मंदिर में स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा व आर्य समाज शकरपुर के तत्त्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रवि बहल मंत्री आर्यसमाज निर्माण ने की।

विभिन्न वक्ताओं में श्री दीपक गुप्ता प्रांतीय धर्म प्रचारक दिल्ली विश्वविद्यालय के सेवानिवृत प्रोफेसर रमेश गोयल भारतीय शुद्धि सभा के श्री चतर सिंह नागर व आर्य समाज के धर्माचार्य श्री यशपाल शास्त्री ने विस्तार से स्वामी श्रद्धानन्द की राष्ट्र के प्रति योगदान को विस्तार से बताया। कार्यक्रम का संचालन यशस्वी मंत्री श्री पतराम त्यागी जी ने किया।

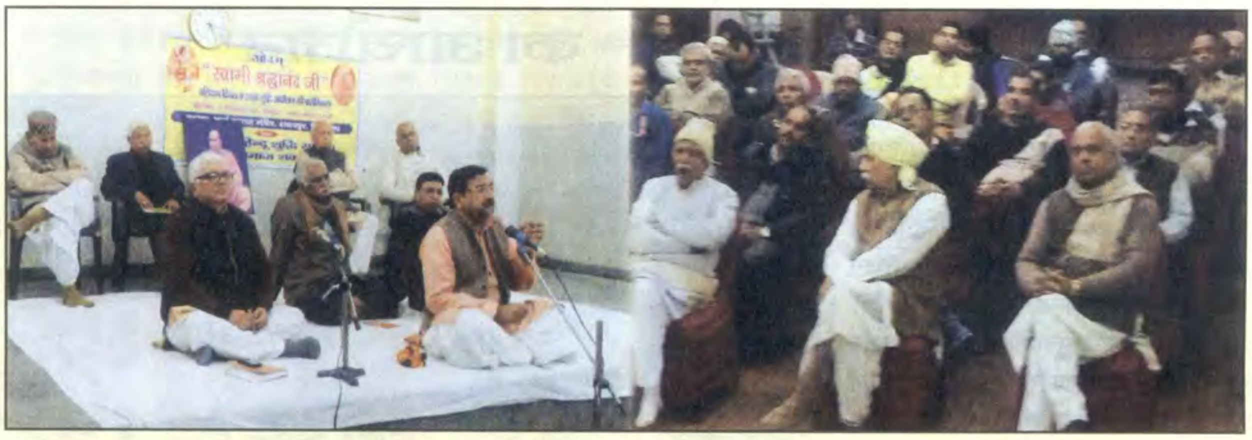

वेद प्रकाश वानप्रस्थी, नंद कुमार वर्मा, विजय प्रकाश शास्त्री, ओम प्रकाश रोहिल, विनोद सिंघल, अशोक शर्मा, लखमी त्यागी, अनिल त्यागी, आदित्य त्यागी तथा सुरेंद्र कुमार रैली कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया एवं स्थानीय जनता ने कार्यक्रम की भूरी–भूरी प्रशंशा की।

आर्यसमाज धामावाला का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज धामावाला देहरादून का तीन दिवसीय 139वाँ वार्षिकोत्सव 'श्रीमद् स्वामी श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम' में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के रूप में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ यज्ञ से हुआ। इसके बाद भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य तथा उनके सहयोगी तबला–वादन में प्रवीण श्री अश्विनी आर्य जी के सम्मिलित भजन हुए। आर्य जगत् के शीर्ष आर्य विद्वान डॉ. वागीश शास्त्री जी ने अपने व्याख्यान में कहा जब मनुष्य पर दुःख आता है तब भी ईश्वर की दया कही दिखाई देती है। मनोविज्ञान के अनुसार दुःख 10 प्रकार के हैं। हमारे कर्मफल के अनुसार जो दुःख आते हैं उनसे हमें आठ लाभ प्राप्त होते हैं। एक लाभ तो यह होता कि दुःख से हमारे कल्याण का मार्ग खुलता है। सुख व कल्याण एक साथ जिस मनुष्य व परिवार में होते हैं वह एक अच्छी स्थिति कही जा सकती है।

अपने व्याख्यान को विराम देते हुए आचार्य जी ने कहा कि आपको मेरे व्याख्यानों में कुछ अच्छा लगा हो तो उसका श्रेय ऋषियों को है।

कार्यक्रम में उपस्थित आर्यसमाज से जुड़े अनेक प्रमुख लोगों का माल्यार्पण कर सम्मान किया गया। इसके बाद आश्रम की पांच कन्याओं ने श्रद्धानन्द गाथा को गाकर प्रस्तुत किया। आश्रम के अधिष्ठाता श्री ओमप्रकाश नांगिया ने भी श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए सरकारी नीतियों के कारण आश्रम में आ रही समस्याओं का उल्लेख किया। अन्त में आर्यसमाज के प्रधान श्री महेश कुमार शर्मा जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर एक विस्तृत पावर प्वाइण्ट प्रजन्टेशन दिया। इसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन विषयक प्रत्येक जानकारी को आडियो विजुएल, द्रश्य व श्रव्य, माध्यम से प्रस्तुत किया। कार्यकम के अन्त में शान्ति पाठ एवं और ऋषि लंगर का आयोजन हुआ।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 02/03-01-2019

आर्य समाज,पटियाला में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस का आयोजन

महर्षि दयानंद सरस्वती के अनन्य भक्त, महान क्रांतिकारी, गुरुकुल शिक्षा के पुनरुद्धरक, सर्वस्व बलिदानी स्वामी श्रद्धानंद जी का 92वाँ बलिदान दिवस आर्य समाज मन्दिर,पटियाला द्वारा बड़ी श्रद्धा से मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक यज्ञ से हुआ। आर्य समाज के सभी सदस्यों व विभिन्न स्कूलों से आए हुए बच्चों तथा अध्यपको ने पवित्र यज्ञाग्नि में आहुतियां प्रदान की।

चंडीगढ़ से साध्वी विशोका यति जी विशेष रूप से पहुचीं। उन्होंने ने अपने भजनों एवं उपदेश से स्वामी जी को निर्भीक क्रांतिकारी सन्यासी बताया।

प्राचार्य एस आर प्रभाकर कहा कि स्वामी श्रद्धानंद जी का जीवन पूरी मानवता के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने वैदिक संस्कृति के लिए प्रचार प्रसार के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया और अंत में उसी के लिए बलिदान हो गए।

इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक बिजेन्द्र शास्त्री, प्रिं निखिल मण्डल शास्त्री, परोहित गजेन्द्र शास्त्री ने भी समारोह को सम्बोधित किया। वेदप्रकाश तुली, रमेश गंडोत्रा ने भजनों के माध्यम से तथा मास्टर सी आर मित्तल ने कविता के माध्यम से अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित की। समारोह के अध्यक्ष प्रधान राजकुमार सिंगला ने उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद करते हुए कहा कि आर्य समाज पटियाला द्वारा समाज सेवा एवं वैदिक विचारधारा के प्रचार प्रसार का कार्य निरन्तर किया जा रहा है। कार्यक्रम में 60 जरूरत मन्द स्कूली बच्चों को जर्सी व जूते प्रदान किये गये और अंत में लंगर वितरित किया गया।

एल.आर.एस. डी.ए.वी. अबोहर में नशा मुक्त संगोष्ठी का आयोजन

पंजाब सरकार द्वारा चलाए जा रहे नशा मुक्त पंजाब अभियान के तहत एक संगोष्ठी का आयोजन एल.आर.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल अबोहर के सृजन सभागार में किया गया।

एस.डी. एम. पूनम सिंह द्वारा विद्यालय में शुरू किए किए गए 'तू मेरा बड्डी' कार्यक्रम के अंतर्गत युवाओं को नशों के विरुद्ध जागृत करने के उद्देश्य से समय–समय पर अलग–अलग कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, इसी कड़ी के तहत स्थानीय सिविल अस्पताल के प्रसिद्ध मनोचिकित्सक डॉ. महेश कुमार को विद्यार्थियों को नशों के विरुद्ध जागृत करने के उद्देश्य से अतिरिक्त व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर कक्षा नवम से 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थी उपस्थित थे। सर्वप्रथम विद्यालय के सभागार में पधारने पर स्कूल प्रिंसीपल श्रीमती स्मिता शर्मा द्वारा डॉ. महेश कुमार को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया।

विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. महेश ने कहा कि नशों के विरुद्ध युवाओं को जागरूक करने की आज अति आवश्यकता है। एक पी.पी.टी. के माध्यम से डॉ. महेश कुमार ने विद्यार्थियों को नशीली दवाओं के उपभोग करने के हानिकारक प्रभाव और उनसे निपटने के तरीकों से परिचित कराया। विद्यार्थियों ने उनसे प्रश्न भी पूछे और चर्चा में अपनी उत्सुकता को शांत किया। विद्यार्थियों ने सामूहिक चर्चा में अति उत्साह के साथ भाग लिया। श्रीमती शर्मा ने भी विद्यार्थियों को नशीली दवाओं से दूर रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय में हुआ विदाई समारोह

सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापिकाओं द्वारा विदाई पार्टी का आयोजन किया गया, जिसमें स्कूल के स्टाफ, कॉलेज प्राचार्य, डॉ. विवेक कोहली जी तथा डॉ. सतनाम कौर, अध्यक्षा शिक्षण–प्रशिक्षण, श्रीमती रश्मि ने शिरकत की। भावी अध्यापकों ने कविता, गीत प्रस्तुति के द्वारा स्कूल का आभार व्यक्त किया। छात्राध्यापिका अल्का ने चार महीने की संपूर्ण शिक्षण अवधि को एक पी.पी.टी. के रूप में प्रस्तुत किया।

सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अम्बाला के छात्राध्यापिकाओं को शिक्षण अनुभव प्राप्त करने के लिए राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल में भेजा गया। स्कूल में भावी अध्यापकों ने शिक्षण क्रियाओं के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं को करने का अनुभव प्राप्त किया। भावी अध्यापिकाओं ने बेटी–बचाओ, बेटी–पढ़ाओ, स्वच्छ भारत अभियान पौधा रोपण, नृत्य प्रतियोगिता, कविता पाठ अन्य गतिविधियों में भाग लेकर अपनी ट्रेनिंग को पूरा किया।

प्राचार्य डॉ. विवेक कोहली जी ने भावी अध्यापकों को निरन्तर परिश्रम करने और उत्साहित होकर कार्य करने की प्रेरणा दी। डॉ. सतनाम कौर, इंचार्ज शिक्षण–प्रशिक्षण जी ने भी छात्राध्यापकों को अपने कार्य को पूरी निष्ठा से करने के लिए प्रेरित किया व प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए बधाई दी।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**